चकमक

सितम्बर, 1990

बाल विज्ञान पत्रिका

रु. 4.00



सांझी



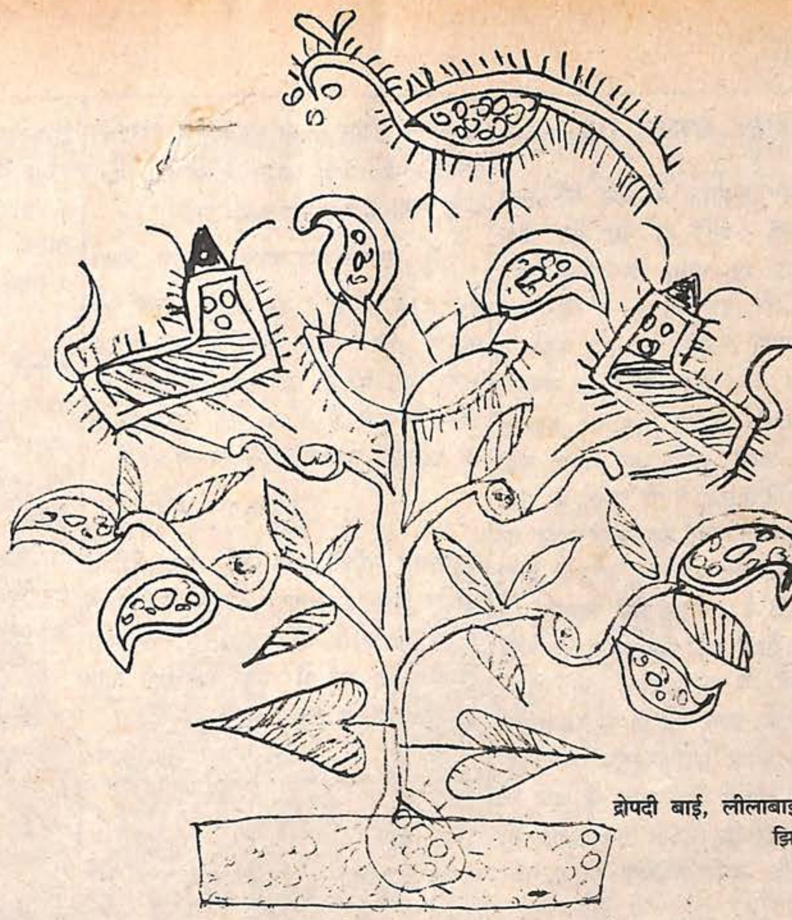
पूजा सिन्हा

चकमक बाल विज्ञान पत्रिका
वर्ष 6 अंक 3 सितंबर, 1990
संपादक
विनोद रायना
सह-संपादक
राजेश उत्साही
कला
जया विवेक
उत्पादन/वितरण
हिमांशु बिस्वास, कमलसिंह

चकमक का चंदा
एक प्रतिः चार रुपए
छमाही : बीस रुपए
वार्षिक : चालीस रुपए
डाक खर्च मुफ़्त
चंदा, मनीऑर्डर या बैंक ड्राफ्ट से एकलव्य के नाम पर भेजें।
कृपया चेक न भेजें।

पत्र/चंदा रचना भेजने का पता
एकलव्य,
ई-1/208, अरेरा कॉलोनी,
भोपाल-462 016 (म.प्र.)
फोन : 61380

कागज़ : 'यूनिसेफ' के सौजन्य से।
सहयोग : राष्ट्रीय विज्ञान व प्रौद्योगिकी संचार परिषद (विज्ञान व प्रौद्योगिकी विभाग, नई दिल्ली)



द्रोपदी बाई, लीलाबाई, बारह वर्ष, झिरी, राजस्थान

इस अंक में...

आवरण : सांझी का 'किलाकोट'। पिछला आवरण : सांझी में बनाई जाने वाली एक आकृति। दोनों पारदर्शियां : घनश्याम

एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है जो शिक्षा, जनविज्ञान एवं अन्य क्षेत्रों में कार्यरत है। चकमक, एकलव्य द्वारा प्रकाशित अव्यवसायिक पत्रिका है। चकमक का उद्देश्य बच्चों की स्वाभाविक अभिव्यक्ति, कल्पनाशीलता, कौशल और सोच को स्थानीय परिवेश में विकसित करना है।

पाठक लिखते हैं

चकमक चमक गई...

अप्रैल वाली चकमक के बाद मई वाली चकमक नहीं मिलने से मेरा मन थोड़ा चिंतित हुआ था! परंतु फिर मिल गई। हुआ यह कि डाक वाले ने मई वाली चकमक अपने लड़के को ही पढ़ने के लिए दे दी थी। उसके लड़के ने चकमक के ऊपर वाले पन्ने से जिस पर चकमक लिखा है अपनी पुस्तक पर ज़िल्द चढ़ा ली। जिस विद्यालय में मैं पढ़ता हूं, उसी में वह पढ़ता है। पर वह कक्षा आठ का छात्र है। आठवीं का एक विद्यार्थी हमारे पड़ोस में भी है। पड़ोस वाले विद्यार्थी की निगाहें उस ज़िल्द मढ़ी किताब पर पड़ गईं। वह विद्यार्थी मेरे पास आया और मुझसे कहा, चकमक चमक गई तो मैं बहुत खुश हुआ। मैंने अपने प्रधानाध्यापक से कहा। उन्होंने उस लड़के से चकमक के बचे हुए बाकी पन्ने बुलवाए। और इस प्रकार पूरे विद्यार्थियों के सामने चकमक चमक गई।

☐ बृजवली यादव, दसवीं बड़की, नैनीजोर, बिहार

चकमक जून, 90 का अंक देखा। लेख *हिमालय* विशेष पसंद आया। यह सचित्र रोमांचित कर देने वाला था। धारावाहिक *भूगर्भ की यात्रा* भी पसंद आ रहा है।

☐ चंद्रशेखर सिंह, बिलासपुर

लेख *हिमालय* पढ़कर तथा इससे संबंधित रंगीन चित्र प्राप्त कर बहुत आनंद आया। *दुनिया पक्षियों की* के अंतर्गत कोयल के संबंध में जानकारी प्राप्त कर बहुत खुश हुए।

☐ रामकुमार साहू, तेंदूभाटा, दुर्ग

आपकी पत्रिका में प्रकाशित चित्रों का प्रिंट कुछ हल्का होने के कारण कुछ दिखने में असुविधा होती है। बाकी इस पत्रिका की मैं जो कुछ बड़ाई करूं, मेरे लिए कम है।

☐ गुलजार नवी खान, बरेली

कहानी *राजा का दरवाज़ा* तथा *हिमालय* पर जानकारी पसंद आई।

☐ एकता अरोरा, हज़ारीबाग

विज्ञान से संबंधित लेख और कविताओं को प्राथमिकता दें।

☐ तौहिक जौहर, रिकाबगंज, टिकारी

हिमालय शीर्षक के अंतर्गत विस्तृत जानकारी अच्छी लगी। अन्य सामग्री में *कोयल, निडर बनो,* तथा कविताएं अच्छी लगीं।

☐ भगवान सिंह यादव, बाबरला, बिहार

जून अंक में *हैजे से बचाव, सांप का सामना, भूगर्भ की यात्रा* कहानी अच्छी लगी। इस पत्रिका की भाषा सरल होने के कारण समझने में दिक्कत नहीं होती। *राजा का दरवाज़ा,* कहानी बहुत अच्छी लगी।

☐ शशिभूषण सिंह, पटना

कविताएं *ग़रीबी हटती नहीं, दुआ, हैजे से बचाव* शिक्षाप्रद लगीं। कोयल के बारे में दुर्लभ जानकारी देने के लिए धन्यवाद! *हिमालय* के बारे में सचित्र जानकारी बहुत अच्छी लगी व समझ आई।

☐ अंजना सिंह, इटावा

जून की *कोयल, हिमालय के दंग करने वाले अलग-अलग रंग, चलते-फिरते तथ्य* अच्छे लगे। जुलाई के अंक में *नल के पीछे* और *अच्छे चित्र* भी पसंद आए।

☐ सौरभ मिश्र, रीवा

वास्तव में चकमक हम सब बच्चों के लिए ज्ञानवर्द्धक पत्रिका है। और एक जो अंतर्राष्ट्रीय चित्रकला प्रतियोगिता के बारे में बताया गया था, उस पते पर मैंने संपर्क किया और मुझे जानकारी भी मिल गई।

☐ संगीता नेवारी, तरैया, बिहार

भूगर्भ धारावाहिक अच्छा लगा। जून अंक भी पसंद आया।

☐ नीतू सचान

वैसे तो सभी अंक अच्छे लगे लेकिन जून, 1990 का अंक मुझे बहुत भाया। इस अंक का *'हिमालय'* शीर्षक लेख मुझे सर्वाधिक प्रिय लगा। इसके अंर्तगत दिए गए रंगीन चित्रों ने इसकी खूबसूरती में चार चांद लगा दिए।

☐ संतोष मिश्र, भोजपुर, बिहार

हिमालय व कश्मीर के बारे में प्रकाशित रोचक व ज्ञानवर्द्धक जानकारी अच्छी लगी। कृपया आप इसी तरह अन्य प्रदेशों, पर्यटन स्थलों, दर्शनीय स्थानों आदि के बारे में भी जानकारी प्रकाशित करें।

☐ पीयूष, मनासा, म.प्र.

गरीबी हटती नहीं है, कविता जहां बच्चों को आनंद देती है, वहीं आज की बिगड़ी व्यवस्था को कोसती भी है। आपने कोयल को अंग्रेजी नाम कोयल ही बताया है, जबकि शब्दकोष में कोयल की अंग्रेजी CUCKOO बताई है। *(CUCKOO = कुक्कू यानी पपीहा को कहते हैं, कोयल को नहीं—संपादक)।*

हिमालय और चलते-फिरते तथ्य जानकारी की बातों से भरा पड़ा है। लेकिन विज्ञान पत्रिका होने के नाते प्रत्येक अंक में एक वैज्ञानिक की जीवनी एवं नई खोजों की सूची अवश्य देनी चाहिए।

☐ कुमार रामाधीन, धमौल, बिहार

कोयल के बारे में कविवर हरिवंशराय बच्चन की यह पंक्तियां याद आती हैं—

कौन तयस्या करके कोकिल,
काली कर डाली काया?
कौन तपस्या करके कोकिल
तूने ऐसा स्वर पाया?

☐ राजेश कुमार, मुरारपुर, बिहार

जुलाई माह की पत्रिका में पेज 31 से 36 तक जो सामग्री है वह बहुत अच्छी लगी। इस प्रकार की सामग्री को और अधिक स्थान मिलना चाहिए।

☐ पीयूष जैन, छतरपुर

सृजन अंक सामने है। सभी रचनाएं व चित्र देखे अच्छे हैं। पर ऐसा सृजन तो समय-समय पर प्रकाशित होता रहता है। पिछले अंकों में कई बालकों की इतनी मर्मस्पर्शी रचनाएं थीं कि प्रशंसा किए बिना नहीं रहा जाता। जैसे *'मरकने गुरुजी'*। खैर *'कुटेल गद्दा,' 'बारात से लौटते में,' 'तीस की मुर्गी'* और *'नल के पीछे'* अच्छी रचनाएं हैं। *गुदड़ीलाल* की अपेक्षा *भूगर्भ यात्रा* अच्छा लग रहा है।

☐ गिरिजा कुलश्रेष्ठ, तिलौंजरी, मुरैना



श्रद्धा तोमर, पनिहार, ग्वालियर

रिमझिम-रिमझिम

रिमझिम-रिमझिम बारिश आई।
सभी जगह हरियाली लाई
हरे वृक्ष हैं हरे हैं वन
हरे-हरे दिखते उपवन
हरियाली की चादर छाई
रिमझिम-रिमझिम बारिश आई।

उफन पड़े हैं नदियां नाले
इन पर लहरें डेरा डाले
उछल कूद कर रही हैं भाई
रिमझिम-रिमझिम बारिश आई।

खुश हो रहे किसान हमारे
हल लेकर चल पड़े हैं सारे
खुशियां कृषकों की हैं लाईं
रिमझिम-रिमझिम बारिश आई।

सारी धरती है आनंदित
सबके हृदय आज हैं पुलकित
धरती का श्रृंगार भी लाई
रिमझिम-रिमझिम बारिश आई।

□ रोली एस. चंद्र, आठवी, शहडोल, उमरिया

भैंस खो गई

कल हमारे गांव में भैंस खुवा (खो) गई थी। मोहनलाल की भैंस थी। उसे रोज प्रेम चराता था। कल जब वो भैंस चराने गया तो वापस आते वक्त वो भैंस उसके साथ नहीं थी। और सब भैंसें वापस आ गईं। उससे पूछा कि तूने भैंस कहां छोड़ी तो प्रेम ने कहा कि उसने तलाई के यहां देखा था। फिर मोहनलाल ने मोती से पूछा, तो मोती ने कहा हमने तो नहीं देखी। तो मोहनलाल खेतों में ढूंढने गया तो उसे नहीं मिली। फिर बांसखेड़ी गया तो वहां भी नहीं मिली।

पूरे गांव के लोग ढूंढने लगे। मोहनलाल मनपसर गया तो वां मोहनलाल का सासरा था तो वो रोने लगे। जंगल में नहीं मिली। तो फिर बिसलाई गए। वहां भी नहीं मिली। फिर देवता बुलाया। देवता ने कहा कि भैंस को तो पांच मनख (आदमी) लंकाव (दक्षिण) दिशा में ले गए हैं। तीन तो लार-लार (साथ-साथ) जारिया, दो आसपास हैं। ढूंढने जावो तो ध्यान राखजो। तो सब लोग लंकाव दिशा आड़ी (तरफ) गए।

जब उनको गए एक घंटा हो गया तो अचानक ही एक भैंस आती दिखाई। अरे ये तो मोहन की भैंस है—एक ने कहा। वो मोहन की ही भैंस थी, पर ये तो लंकाव दिशा से नहीं आई। बेचारे ढूंढने वाले लोग सुबह वापस आए। फिर सबने रोटी खाई। फिर सब सोए। भैंस तो अपने आप चरते-चरते आ गई थी।

☐ **रामलाल, दस वर्ष, झिरी, झालावाड़**



चित्रः पद्मा, सातवीं, देवास

खरगोश के बच्चे



श्रुति त्रिपाठी, दूसरी, नई दिल्ली

एक दिन मैं बैल चराने खेत पर गया था। तो कालूराम का बैल भी वहां चर रहा था। मैं तो भाई एक तिंदोनी के नीचे बैठ गया। तो दयाराम और कालूराम के बैल लड़ने लगे। बैल के लड़ने से एक झाड़ी में से एक खड़ा (खरगोश) निकलकर भागा, तो मैंने देखा। तभी एक बैल का पैर उस झाड़ी पर पड़ गया। वहां तीन और बैल खड़े थे। तीनों बच्चे थे। बैल के पैर से एक बच्चा मर गया। मैं बाकी दोनों को उठाकर घर ले आया। वो बहुत छोटे हैं अभी भी। मैं उनको रोज साथ ले जाता हूं, जब बकरी चराने जाता हूं, उनको बकरी का दूध पिलाता हूं। घर पर पिंजरे में रखता हूं, कहीं बिल्ली न खा जाए। दोनों खड़े अब दौड़ने लगे हैं। सबने कहा - दयाराम इन खड़ों को वापस झाड़ी में रख आओ। पर मैंने सोचा कि अब तो इनकी मां वां पे नहीं होगी। मैंने नहीं रखा।

☐ दयाराम, बारह वर्ष, झिरी, झालावाड़



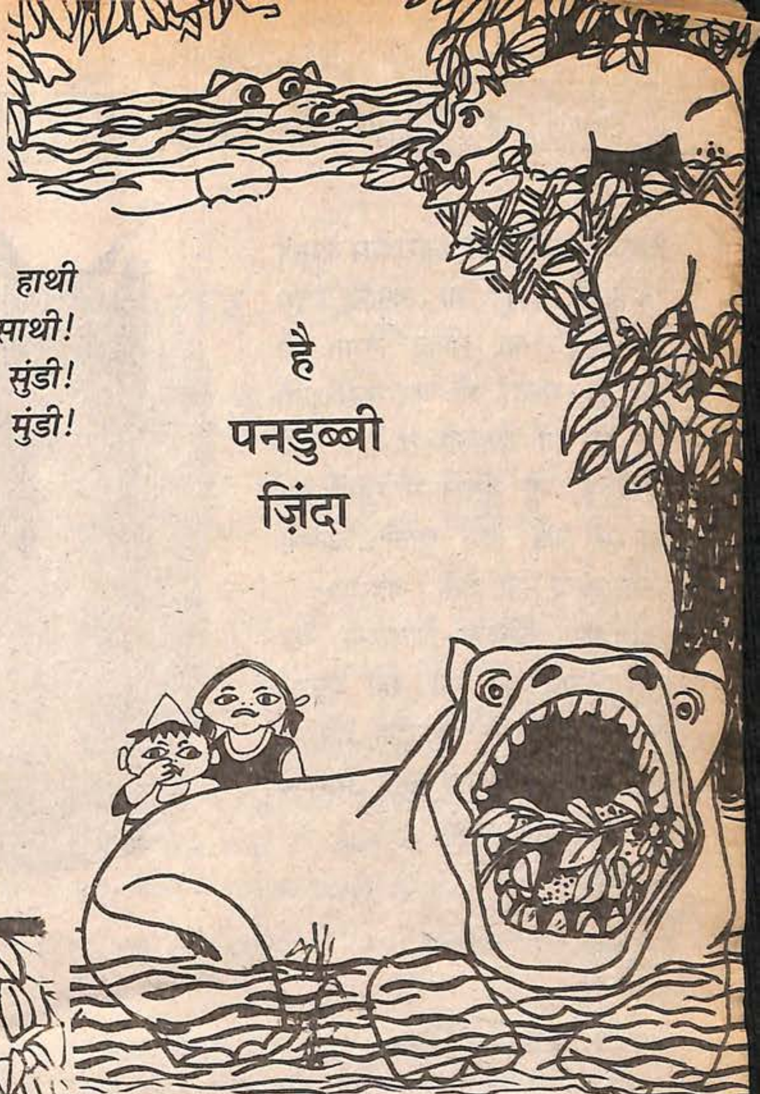
मेरा दोस्त नेवला

ऋचा, आठ वर्ष

एक दिन मैं स्कूल से आ रहा था तो रास्ते में मैंने देखा कि एक नेवला बीमार पड़ा है। उससे चला नहीं जा रहा था। मैं उसे अपने घर ले आया और उसे रोज़ दूध पिलाया। जब वह अच्छा हो गया तो छुट्टियों में वह मेरे साथ ही रहने लगा। वह नेवला बहुत अच्छा था और मुझसे बहुत हिल-मिल गया था। मैं और नेवला, हम दोनों साथ-साथ खेलते कूदते थे। रोज घूमने जाते थे।

एक दिन हम जंगल की तरफ खेत में घूमने चले गए। हम खेत में गए और इधर-उधर खेत को देखने लगे। इतने में एक काला सांप दिखा। मुझे बहुत डर लगा। मेरी बात मेरा नेवला समझता था, मैंने उसे कहा, मुझे सांप से बहुत डर लग रहा है। तो नेवले ने उसे पकड़ा और मार डाला और मैं निडर हो गया। पर वह नेवला और बगैर कुछ देखे मेरे पास से जंगल की ओर भाग गया। वह मुझसे आज़ाद हो गया।

□ विष्णु प्रसाद, चौदह वर्ष, सेल्दा



है पनडुब्बी ज़िंदा

बूझो बूझो बूझो!
मग़ज़ लगाकर जूझो!!

मुंह ज्यों गुफा डरौना
देखे, रोये छौना!
ढेरों भोज भकोसे
भीम देखकर कोसे!

डील डौल ज्यों हाथी
पर ना उसका साथी!
छोटी, बड़ी न सुंडी!
लेकिन लंबी मुंडी!

मस्ताना बम भोला
संग-संग चलता टोला!
है पनडुब्बी ज़िंदा
थल का भी बासिंदा!

डरता कभी न थोड़ा
क्या? दरियाई घोड़ा!



छू-छू बोले अंधे

बूझो बूझो बूझो!
मग़ज़ लगाकर जूझो!!

भीम भयंकर भारी
झुंड-झुंड वनचारी
लेकिन बना घरेलू
सीधा-सादा खेलू!

अज़गर मोटा लंबा
तगड़ा ऊंचा खंभा
हिलती एक पहाड़ी
खड़ी दिवारी आड़ी!

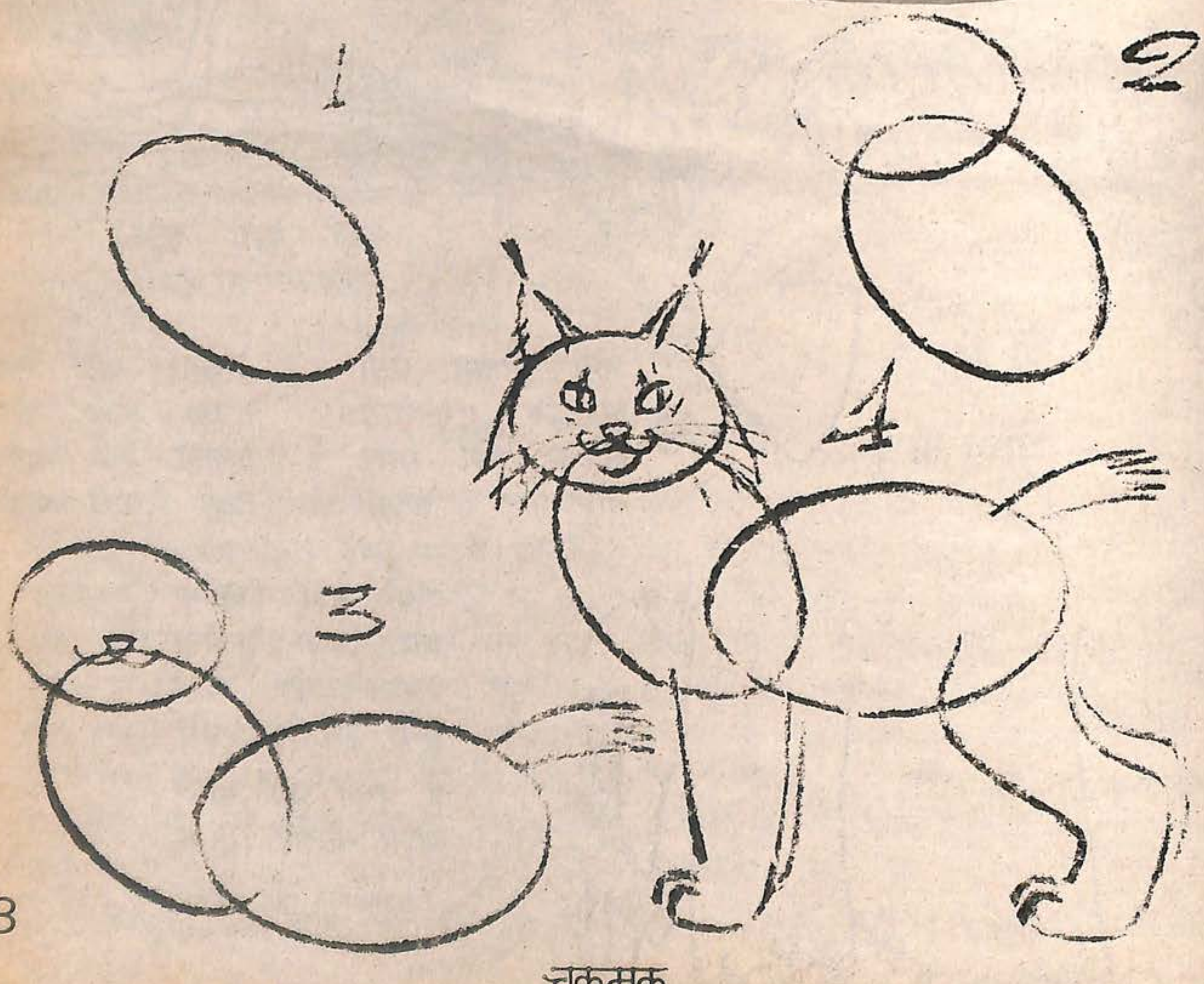
पंखा बड़ा तिकोना
सोंटा कड़ा सलोना
उचका-उचका कंधे
छू-छू बोले अंधे!
है बच्चों का साथी
बोलो, बोलो? हाथी!

□ रामवचन सिंह 'आनंद'
चित्र : शोभा घारे

तुम भी बनाओ



बिल्ली, जो हमारे आसपास घूमती रहती है। चूहे तो उसका प्रिय भोजन हैं, पर मौका लगते ही वह दूध-मलाई भी चट कर जाती है। पर ये बिल्ली तो शेर की मौसी हैं, जो जंगल में रहती है। घर में पाई जाने वाली बिल्ली इतनी ऊंची नहीं होती। बहरहाल... क्या ऐसी बिल्ली-चिबल्ली का चित्र बनाने का मन नहीं करता तुम्हारा। यों इसको पकड़ना आसान नहीं, पर चित्र बनाना बहुत आसान है—देखो तो भला!



सांझी, झांझी और टेसू

खेलों की अपनी दुनिया है। जिसमें मनोरंजन से लेकर शारीरिक व्यायाम और पदक जीतने जैसे अलग-अलग उद्देश्य हो सकते हैं। खेलों से हम लोगों की विभिन्न क्षमताओं, कलाओं और कौशल का अंदाज़ लगा सकते हैं। और अगर थोड़े और गहरे जाएं तो उनकी संस्कृति की झलक भी पा सकते हैं। कोई खोजने वाला हो तो उनमें ही तमाम किंतु-परंतु भी मिलेंगे और उनके साथ जुड़ी किंवदंतियां भी।

बचपन के खेल, जो तुम रोज़ खेलते हो, अनूठे और निराले होते हैं। कंचे, कबड्डी, सितोलिया, लंगड़ी, आती-पाती, छुआ-छुई, जैसे घंटे दो घंटे के खेलों के अलावा ऐसे खेल भी होते हैं जो एक दिन नहीं पूरे पंद्रह-पंद्रह दिन तक लगातार खेले जाते हैं। सांझी, झांझी और टेसू ऐसे ही खेल हैं। तुममें से बहुतों ने ये खेल खेले होंगे। अफसोस यही है कि ये खेल अब गांव और कस्बाई जनजीवन तक ही सीमित रह गए हैं। शहरों की चकाचौंध में इनका प्रकाश नज़र नहीं आता। बहरहाल.... ये जहां आज भी खेले जाते हैं, बच्चों में एक रोमांच, चेतना और अपने समाज को समझने-बूझने की जिज्ञासा भरने की ताकत रखते हैं।

थोड़ी-बहुत भिन्नता के साथ ये खेल मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश, राजस्थान, बिहार, हरियाणा तथा देश के अन्य हिस्सों में खेले जाते हैं।

इनकी शुरुआत के बारे में भी तरह-तरह की कहानियां प्रचलित हैं। बुंदेलखंड की एक कथा के अनुसार वर्षों पहले एक संपन्न ब्राह्मण परिवार था। परिवार में साठ-सत्तर सदस्य थे। उनमें से एक ब्राह्मण अपनी पुत्री को लेकर किसी कारणवश परिवार से अलग रहने अलग रहने लगा। वह जंगल के किनारे एक गांव में रहता था। वहीं-कहीं एक बलशाली व्यक्ति भी था, जिससे अन्य लोग बहुत डरते थे। और उससे दूर ही रहते थे। उस व्यक्ति ने ब्राह्मण की लड़की को देखा और उससे विवाह करने की इच्छा व्यक्त की।

ब्राह्मण ने जब सुना तो वह घबराया। कुछ सोचकर उसने कहा, ठीक है विवाह हो जाएगा, पर इसमें थोड़ा समय लगेगा। मेरी लड़की सोलह दिन तक गोबर की थपलियां बनाकर खेलेगी। उस व्यक्ति ने कहा, ठीक है मैं सोलह दिन बाद आऊंगा।

वास्तव में ब्राह्मण उस व्यक्ति से अपनी लड़की का विवाह नहीं करना चाहता था। उसने सोचा,सोलह दिन में मैं अपनी मदद के लिए रिश्तेदारों को बुला लूंगा। यही सोचकर उसने पत्र लिखा।

सोलह दिन तक लड़की गोबर की थपलियों से खेलती रही। यही **सांझी** कहलाया। सोलह दिन बीतने पर वह व्यक्ति दुबारा आया। ब्राह्मण के रिश्तेदारों में से अब तक कोई नहीं आया था। इसलिए उसने फिर बहाना बनाया और कहा कि उसकी लड़की अब नौ दिन तक मिट्टी के गौर बनाकर खेलेगी। व्यक्ति फिर चला गया।

ब्राह्मण अपने रिश्तेदारों की प्रतीक्षा में बैठा रहा, वे नहीं आए। नौ दिन भी गुज़र गए। इन नौ दिनों को **सुअटा पर्व** कहा जाता है। वह बलशाली व्यक्ति फिर आ धमका। ब्राह्मण

मायूस हो गया। उसने कहा ठीक है, बस अब अंतिम रस्म बाकी है। तुम और मेरी बेटी पांच दिन तक घर-घर भीख मांगो। शरद पूर्णिमा के दिन तुम्हारा विवाह कर दिया जाएगा।

पांच दिन भी बीत गए। ब्राह्मण के रिश्तेदार नहीं आए। ब्राह्मण ने विवाह की तैयारी शुरू कर दी। जब विवाह आधा हो गया तभी ब्राह्मण के रिश्तेदार आ पहुंचे। पर उन्होंने उस बलशाली व्यक्ति के साथ-साथ लड़की को भी मार डाला।

कहते हैं **टेसू** और **झांझी**, पांच दिन तक उस बलशाली व्यक्ति और लड़की के नाम से ही खेले जाते हैं शायद तुम भी खेलते होओगे।

यहां इन तीनों खेलों के बारे में संक्षिप्त में बता रहे हैं।

हम संझा साझी खेलते

नमी से लरजते — क्वार के महीने में जब वर्षा रानी की 'छमछम' ठहर जाती है, बिजली की सुनहरी पायलें उतारकर रख दी जाती हैं, बादलों के नगाड़े थम जाते हैं और मौसम की रानी सुस्ताने लगती है, आकाश का रंग निखर जाता है, तारों की चमक बढ़ जाती है, धरती नहाई-निखरी-सी, बेलबूटों से सजी हरी चूनर ओढ़ मुस्करा उठती है, कांस फूल उठता है और नदी नाले उजले होकर इठलाने लगते हैं, तब तारों की छांव में किशोरियों की मधुर तानें गूंज उठती हैं—

हम संझा सांझी खेलते.....
म्हारे उतते आए बाबुल, बाबुल ने लई पहचानि.....

फूलों के रूप और गंध से गमकता, लोक कला के सौंदर्य से दमकता यह त्यौहार किशोरी बालिकाओं का सबसे ज़्यादा उल्लास और आनंद से भरा त्यौहार होता है। क्वार महीने की पड़वा



से अमावस्या तक यह उत्सव गाते-खेलते संपन्न होता है। पंद्रह दिन तक हर शाम गीतों से गुंजारित होती है। इसमें लड़के शामिल नहीं होते।

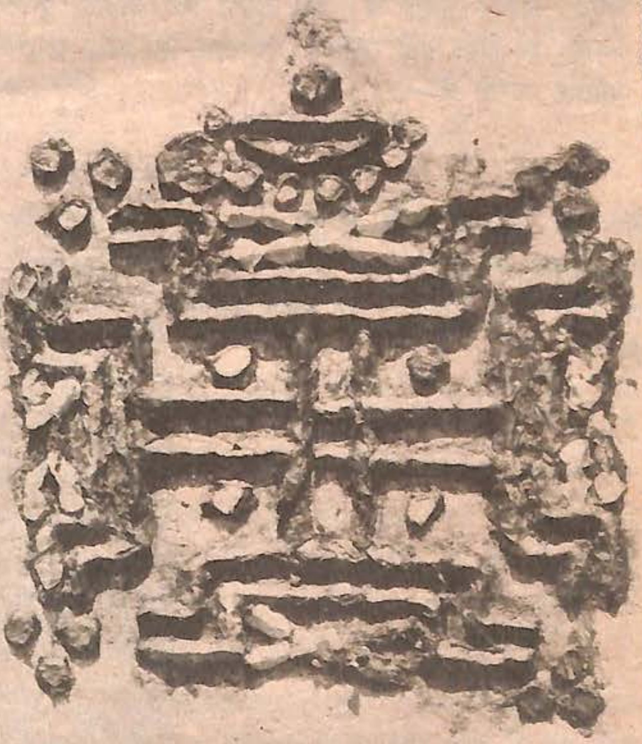
पड़वा को बालिकाओं की उल्लासमय प्रतीक्षा का अंत हो जाता है और प्रारंभ हो जाती है, सांझी को अपने द्वार पर सजाने की स्पर्धा। धरती पर सांझ के उतरते-उतरते फूलों का ढेर लग जाता है—सफ़ेद, गुलाबी, नीले और चटक पीले मोहक फूल जो बाड़ों पर छाई अनगिनत लताओं पर छाए रहते हैं।

उधर बड़ी लड़कियां दीवार को गोबर से लीपकर, गोबर से ही सुंदर आकृतियां बनाती हैं। एक नहीं अनेक तरह की आकृतियां... चंदा, सूरज, मोर, गूजरी, पनिहारिन, वृक्ष... एक एक से बारह दिन विभिन्न चित्र बनाए जाते हैं, उन पर फूलों व पत्तियों की ऐसी सजावट कि देखते ही बनता है। स्वयं लड़कियां अपनी सांझी के सौंदर्य पर मुग्ध हो जाती हैं और हुलसकर गा उठती हैं—

मेरी सांझुल देके आसो पासो फूल रही फुलवारी
तुम पहरौ सांझुल दे रानी नौ तोले का हरवा
प्यारे बाबुल ने गढ़ायौ मैया रानी ने दे धाज्यौ

दिया बाती की बेला पर सभी लड़कियां इकट्ठी होकर भोग लगाती हैं। हलुआ, पूरी, खीर या कच्चा दूध जो भी हो, सांझी के भोग के लिए बड़े 'जतन' और 'अछूते' रूप से रखा जाता है। भोग लगाती हैं और गाती हैं—

मेरी सांझी भोग ले
और की सांझी रोग ले....
मेरी सांझी रानी



पता नहीं क्यों, "और" की सांझी के लिए ऐसी अमंगल कामना? यह हास-परिहास के साथ मानव की उस कमज़ोरी की ओर भी संकेत है जिसके कारण वह प्रथम अपनी और अपनी वस्तु की श्रेष्ठता चाहता है।

मायूस हो गया। उसने कहा ठीक है, बस अब अंतिम रस्म बाकी है। तुम और मेरी बेटी पांच दिन तक घर-घर भीख मांगो। शरद पूर्णिमा के दिन तुम्हारा विवाह कर दिया जाएगा।

पांच दिन भी बीत गए। ब्राह्मण के रिश्तेदार नहीं आए। ब्राह्मण ने विवाह की तैयारी शुरू कर दी। जब विवाह आधा हो गया तभी ब्राह्मण के रिश्तेदार आ पहुंचे। पर उन्होंने उस बलशाली व्यक्ति के साथ-साथ लड़की को भी मार डाला।

कहते हैं **टेसू** और **झांझी**, पांच दिन तक उस बलशाली व्यक्ति और लड़की के नाम से ही खेले जाते हैं शायद तुम भी खेलते होओगे।

यहां इन तीनों खेलों के बारे में संक्षिप्त में बता रहे हैं।

हम संझा साझी खेलते

नमी से लरजते — क्वार के महीने में जब वर्षा रानी की 'छमछम' ठहर जाती है, बिजली की सुनहरी पायलें उतारकर रख दी जाती हैं, बादलों के नगाड़े थम जाते हैं और मौसम की रानी सुस्ताने लगती है, आकाश का रंग निखर जाता है, तारों की चमक बढ़ जाती है, धरती नहाई-निखरी-सी, बेलबूटों से सजी हरी चूनर ओढ़ मुस्करा उठती है, कांस फूल उठता है और नदी नाले उजले होकर इठलाने लगते हैं, तब तारों की छांव में किशोरियों की मधुर तानें गूंज उठती हैं—

हम संझा सांझी खेलते.....
म्हारे उतते आए बाबुल, बाबुल ने लई पहचानि.....

फूलों के रूप और गंध से गमकता, लोक कला के सौंदर्य से दमकता यह त्यौहार किशोरी बालिकाओं का सबसे ज़्यादा उल्लास और आनंद से भरा त्यौहार होता है। क्वार महीने की पड़वा



से अमावस्या तक यह उत्सव गाते-खेलते संपन्न होता है। पंद्रह दिन तक हर शाम गीतों से गुंजारित होती है। इसमें लड़के शामिल नहीं होते।

पड़वा को बालिकाओं की उल्लासमय प्रतीक्षा का अंत हो जाता है और प्रारंभ हो जाती है, सांझी को अपने द्वार पर सजाने की स्पर्धा। धरती पर सांझ के उतरते-उतरते फूलों का ढेर लग जाता है—सफ़ेद, गुलाबी, नीले और चटक पीले मोहक फूल जो बाड़ों पर छाई अनगिनत लताओं पर छाए रहते हैं।

उधर बड़ी लड़कियां दीवार को गोबर से लीपकर, गोबर से ही सुंदर आकृतियां बनाती हैं। एक नहीं अनेक तरह की आकृतियां... चंदा, सूरज, मोर, गूजरी, पनिहारिन, वृक्ष... एक एक से बारह दिन विभिन्न चित्र बनाए जाते हैं, उन पर फूलों व पत्तियों की ऐसी सजावट कि देखते ही बनता है। स्वयं लड़कियां अपनी सांझी के सौंदर्य पर मुग्ध हो जाती हैं और हुलसकर गा उठती हैं—

मेरी सांझुल देके आसो पासो फूल रही फुलवारी
तुम पहरौ सांझुल दे रानी नौ तोले का हरवा
प्यारे बाबुल ने गढ़ायौ मैया रानी ने दे धाज्यौ

दिया बाती की बेला पर सभी लड़कियां इकट्ठी होकर भोग लगाती हैं। हलुआ, पूरी, खीर या कच्चा दूध जो भी हो, सांझी के भोग के लिए बड़े 'जतन' और 'अछूते' रूप से रखा जाता है। भोग लगाती हैं और गाती हैं—

मेरी सांझी भोग ले
और की सांझी रोग ले....
मेरी सांझी रानी



पता नहीं क्यों, "और" की सांझी के लिए ऐसी अमंगल कामना? यह हास-परिहास के साथ मानव की उस कमज़ोरी की ओर भी संकेत है जिसके कारण वह प्रथम अपनी और अपनी वस्तु की श्रेष्ठता चाहता है।

भोग लगाने के बाद शुरू होता है गीतों का सिलसिला। गीत कई तरह के, चंदा के, भैया के, सहेलियों के और सांझी के सौंदर्य के। किंतु सांझी के अधिकांश गीतों का संबंध उस व्यथित नारी से है जो मां-बाप की लाड़ली है और ससुराल में प्रताड़ित है। वह मायके की गलियों के लिए तरसती है। कभी चंदा के द्वारा और कभी किसी बटोही के द्वारा वह मायके संदेश भेजती है—

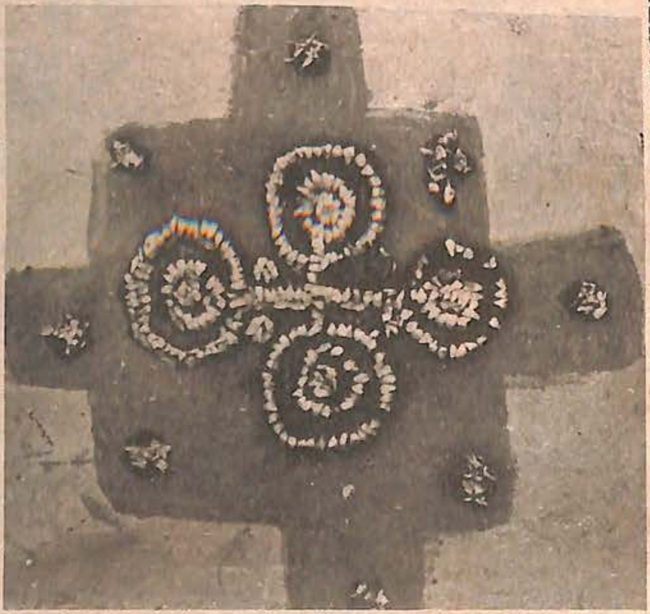
चंदा रे ओ चंद बिरियां तू ढाड़यो ही रहियो....
हेला मारियो ही रहियो....
मेरे बाबुल सों कहियो.... सासु बोलनि मोरे
ननदी ठोलनि मोरे... उन्हें हरवा गढ़ायें

शायद हरवा, कंगन पाकर लालची सास-ननदें उनकी बेटी को तंग करना छोड़ दें। संदेश पाकर 'बाबुल' उधर से निकलते हैं। अपनी लाड़ली को पहचान कर उसकी दुर्दशा पूछते हैं—

तुम काहे के दुख दूबरी
और काहे रे मैलो भेष....
हम सासु के दुख दूबरी
और ननदी रे मैलो भेष.... ।

ऐसा भी सुना जाता है कि सांझी किसी जुलाहे की लाड़ली बेटी थी, जिसे ससुराल वाले बहुत परेशान करते थे। वह दूसरों का अनाज कूटती, पीसती, मजूरी करती और पालती। पर किसी का दिल नहीं पसीजा... शायद ऐसे कटु अनुभवों के कारण ही सांझी क्वारी लड़कियों को आगाह करती है—

खेलि लो बिटिया खेलि लै तू
माई बाबुल के राज....
जब दुरि जागी सासरे.... तो सासु खेलन
नहि दे....



ऐसा नहीं है कि सांझी के गीत सिर्फ़ दुख और निराशा से भरे हुए ही हैं। आपसी नोंक-झोंक और छेड़छाड़ भी इन गीतों में दिखाई पड़ती है।

जैसे—



नरवरगढ़ से गाड़ी आई
इन गाड़ी में का-का आओ
इन गाड़िन में डिब्बा आए
जे डिब्बन में जीरा आओ
जे जीरा मैंने सूखन डारो
जे जीरा मैंने फट-फट फटको
जे जीरा मैं कूटन बैठी
जे जीरा के लड्डू बनाए
जे लड्डू मैंने ससुर चखाए
ससुर निगोड़े ने चख नहीं जाने....

यही गीत अन्य रिश्तेदारों के नाम के साथ ऐसे ही आगे बढ़ता जाता है। एक और उदाहरण—

खेलत-खेलत फरीया फट गई
अब घरें कैसे जाऊं लाल
घरे जाऊं तो अम्मां मारे,
गैल में कुत्ता काटे लाल

यह गीत भी घर के अन्य सदस्यों के नाम के साथ आगे बढ़ता जाता है।

आज के आपाधापी के युग से दूर ये गीत हमारी लोकरीतियों की सरसता व सरलता और प्रकृति की गोद में पलने वाले निश्छल मानव की प्रवृतियों को उजागर करते हैं।

बारह दिन इसी तरह हंसते-गाते पता नहीं कब बीत जाते हैं। तेरहवें दिन सांझी का बड़ा रूप बनाया जाता है। इसे किलाकोट कहा जाता है। इसमें वे सभी आकृतियां सजाई जाती हैं जो पिछले बारह दिनों में सजाई जाती रहीं। मुंह, हाथ और पांव मिट्टी से बनाकर रंग पोतकर सजा लिए जाते हैं। कई लड़कियां गोबर से ही बनाकर पन्नी आदि से सजा लेती हैं। कोट को सजाने में लड़कियां पूरी कला लगा देती हैं। मिट्टी की बनी सुंदर कौड़ियों, रंग-बिरंगी पन्नियों आदि से सांझी जगमगा उठती है। अमावस्या तक इसी कोट से खेलती हैं इसलिए फूल नहीं लगातीं। क्योंकि फूलों के मुरझाने से सांझी का जगर-मगर रूप फीका न पड़ जाएगा।

कोट में एक विशेष चीज़ का महत्व और है। बुंदेलखंड में इसे 'मुड़फोरा बामन' कहा जाता है। इसे मिट्टी से बनाते हैं। इसे सांझी के बीच इस कौशल से लगाया जाता है कि कोई जान न सके। और जान भी ले तो ले ना जा सके। इसके लिए लड़कियां रात भर जागकर उसकी रक्षा करती हैं पर दूसरों का मुड़फोरा चुराने के प्रयास में भी रहती हैं। सुबह अपने मुड़फोरा

को सलामत पाकर वे फूलीं नहीं समातीं और गाती हैं—

ए रे मुड़फोरा
मेरी सांझी को हरवा क्यों न लायो

वह मानो माफ़ी मांगता है—

अबकी तौ भूल्यौ बहना
फिर की तौ लांगो

संभवतः मुड़फोरा सांझी का सुहाग माना जाता है और उसे चुराने की रीति दूल्हे के अपहरण की रीति से संबंद्ध होगी। किसी भी त्यौहार या उत्सव के मूल में एक ही कहानी नहीं होती। समय और स्थान के हिसाब से उसमें अनेक किंवदंतियां जुड़ जाती हैं। कोई समय होगा जब दूल्हे को अपहृत कर लड़की ब्याहना वीरता व गौरव की बात मानी जाती होगी। वधू-अपहरण तो इतिहास की जानी-मानी घटना है।

अमावस्या के दिन सांझी को उतार लिया जाता है और लड़कियां गीत गाती हुई किसी भी जलाशय में भारी मन से अपनी सांझी को सिरा देती हैं। शाम को गोठ (दावत) होती है।

यह सही है कि सांझी सिर्फ़ गांवों कस्बों तक सीमित है। लेकिन उसके गीतों में महिलाओं पर अत्याचार का जो स्वर उभरता है उससे शहर अलग नहीं है। शहर में भी आए दिन दहेज आदि के लिए बहुओं के जलने या जलाकर मार दिए जाने की घटनाएं होती रहती हैं। इसलिए यह कहा जा सकता है कि सांझी के गीतों में हमारे पूरे समाज की तस्वीर उभरती है।

झांझी आई द्वार पे

उधर लड़के जब टेसू खेलते हैं। इधर लड़कियां झांझी खेलती हैं। यह भी एक सामूहिक खेल होता है। इसमें भी लड़के शामिल नहीं होते।



लड़कियां मिलकर एक छोटी मटकी लेती हैं। उसमें बीच में चारों तरफ छोटे-छोटे छेद किए जाते हैं। मटकी पर चूना पोता जाता है और रंग से बेलबूटे बनाए जाते हैं। मटकी के अंदर थोड़ी-सी कंडे की राख भी रखी जाती है और उसके बीच में एक जलता हुआ दिया।

शाम को झांझी लेकर लड़कियां भी घर-घर जाती हैं। वहां गीत गाती हैं। घर की बत्तियां बुझा दी जाती हैं। मटकी में से थोड़ी राख निकालकर चारों तरफ फैलाई जाती है और धीरे-धीरे हाथ से राख पर थपकी देते हैं। राख के बारीक कण हवा में उड़ते हैं। मटकी के छेदों से आ रहे प्रकाश और राख के कणों से ऐसा लगता है जैसे प्रकाश का बड़ा-सा वृत हवा में तैर रहा हो। गीत गाने के बाद अनाज, तेल या कुछ पैसे लेकर झांझी अगले घर चली जाती है। झांझी खेलते समय इस बात का ध्यान रखा जाता है कि रास्ते में कहीं 'टेसू' की फ़ौज न मिल जाए। क्योंकि 'टेसू फ़ौज' हमेशा झांझी को फोड़ने की फ़िराक में रहती है। झांझी भी पांच दिन तक खेली जाती है। शरद पूर्णिमा के दिन टेसू और झांझी के विवाह के समय झांझी फोड़ देते हैं। इकट्ठे हुए पैसों और अनाज से दावत होती है।

टेसू मेरा यही अड़ा

सांझी, झांझी की ही भांति 'टेसू' भी एक प्रसिद्ध व लोकप्रिय उत्सव है। दशहरे की चांदनी नहाई सांझ को जब द्वार-द्वार पर दरी बिछाए थालों में इलायची, पान, सुपारी, बतासे और नारियल के टुकड़े रखकर लोग दशहरे की राम-राम, दुआ सलाम के लिए बैठे होते हैं, तभी अचानक ही किसी द्वार पर लड़कों की टोली धमाचौकड़ी मचाने लगती है—

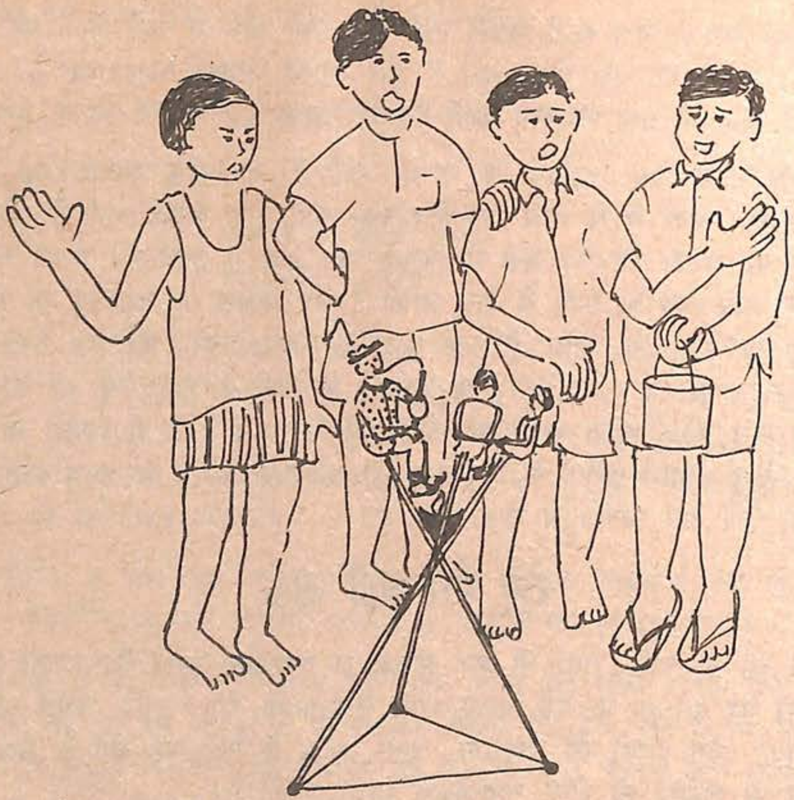
टेसू आए घर के द्वार
खोलो रानी चंदन किवार...

यानी तीन टांगों वाला बादशाह 'टेसू' हाथ में दीपक जलाए, लड़कों की बांहों में आसन जमाए आ पहुंचा है।

टेसू लड़कों का प्रिय खेल है। इसमें लड़कियां भाग नहीं लेतीं। बांस की तीन खप्पच्चियों को बीच से बांधकर डमरुनुमा आकृति बनाई जाती है। इस आकृति के एक छोर की खप्पच्चियों पर टेसू का सिर और हाथ मिट्टी से बनाए जाते हैं। जबकि दूसरे छोर पर पैर बनाए जाते हैं। मिट्टी सूख जाने पर रंग से कान, नाक, आंख, मुंह तथा हाथ-पैरों की उंगलियां बनाई जाती हैं। हाथों पर या खप्पच्चियों के जोड़ पर दिया जलाया जाता है। कुछ इलाकों में एक हाथ में हुक्का और दूसरे में फूल बनाया जाता है या हाथों की जगह टेसू के दो सिपाही बनाए जाते हैं। कहीं-कहीं टेसू बाज़ार में बना हुआ भी मिलता है।

अंधेरा घिरते ही 'टेसू' अपनी फ़ौज के साथ निकल पड़ता है। सांझी की तरह टेसू के भी गीत होते हैं। पर टेसू के गीतों में एक फंतासी की झलक मिलती है। जैसे,

टेसू मेरा यहीं अड़ा
खाने को मांगे दही बड़ा
दही बड़े ने पूछी बात
कितने लोग तुम्हारे साथ
एक सौ अस्सी नौ हज़ार



ऐसे ही और तमाम गीत गाए जाते हैं। हर घर में अलग-अलग तरह से सत्कार होता है। कुछ लोग बड़े चाव से टेसू के गीत सुनते हैं और कुछ दरवाज़ा ही नहीं खोलते। पर टेसू भी पक्का अड़ियल होता है। उसकी पूरी फ़ौज जमी रहती है। टोली के सदस्य बारी-बारी से गीत गाते हैं। फिर भी अगर कोई न पिघले तो अगले दिन आने का वादा करके आगे बढ़ जाते हैं। टेसू अधिक कुछ नहीं मांगता, बस थोड़ा-सा अनाज, पैसे या दिए में जलाने के लिए तेल—

टेसू की मर गई नानी
नानी की थी बिल्ली
बिल्ली बड़ी चिब्बली
बिल्ली खाए बर्फी
बर्फी में लगी पन्नी
दे दो एक चवन्नी

यह क्रम पांच दिन तक चलता रहता है। पांच दिन बाद शरद पूर्णिमा को टेसू और झांझी का अधूरा विवाह होता है। झांझी के साथ-साथ टेसू भी फोड़ दिया जाता है। इकट्ठे हुए पैसे और अनाज बेचकर जो पैसे मिलते हैं, उनसे पूरी टोली दावत उड़ाती है।

तो ये तो थी सांझी, झांझी और टेसू की बात। अगर तुम्हें इनसे संबंधित कोई कहानी, गीत याद हो, या तुम जानते हो तो हमें लिख भेजो! या ऐसे अन्य खेल जो तुम खेलते हो उनके बारे में लिखो।

□ गिरिजा कुलश्रेष्ठ, राजेश उत्साही

फोटो : घनश्याम

चित्र : जया

नीलकंठ



तुमने कभी नीलकंठ पक्षी को देखा है? यदि देखा होगा तो यह भी सोचा होगा कि इस पक्षी का कंठ नीला तो है नहीं, फिर इसे नीलकंठ क्यों कहते हैं? वास्तव में इसका कंठ नहीं, बल्कि पंख नीले होते हैं। जब यह उड़ता है तो इसके पंखों के हल्के और गहरे नीले रंगों की छटा देखते ही बनती है। 'नीलकंठ' की जगह 'नीलपंख' इस पक्षी का अधिक उचित नाम होता। बहरहाल .... नीलकंठ का अंग्रेज़ी नाम रोलर (Roller) है।

नीलकंठ के पेट, पीठ, गला तथा सीना मटमैले रंग के होते हैं। सिर का ऊपरी भाग, पंख तथा पूंछ के किनारे नीले रंग के होते हैं। इसकी चोंच काली और कुछ मोटी होती है। नर और मादा एक जैसे दिखाई देते हैं। इसका आकार मैना के बराबर होता है।

नीलकंठ प्रायः टेलीफोन या बिजली के तारों या किसी पेड़ की टहनी पर बैठकर चारों ओर देखता रहता है। जैसे ही कोई कीड़ा दिखाई पड़ता है, नीलकंठ झपटकर उसे पकड़ लेता है। यदि शिकार बड़ा हो तो उसे पकड़कर वापस अपनी जगह आकर बैठ जाता है और फिर उसे पटक-पटककर मार डालता है, फिर उसे आराम से निगल लेता है। कभी-कभी यह मेंढक, गिरगिट आदि बड़े जंतुओं को भी खा जाता है। वैसे इसका प्रमुख भोजन फ़सलों को हानि पहुंचाने वाले कीड़े ही होते हैं! अपने इस गुण के कारण वह किसानों का मित्र भी होता है। शायद इसी कारण से लोग इसे एक पवित्र पक्षी के रूप में देखते हैं और इसका दिखाई देना एक शुभ संकेत माना जाता है।

नीलकंठ का प्रजनन काल मार्च से जून तक होता है। आमतौर पर चुप रहने वाला यह पक्षी इन दिनों में बड़ा मनमौज़ी बन जाता है। नर और मादा दोनों हवा में उड़-उड़कर खूब कलाबाजियां दिखाते हैं और तरह-तरह की कर्कश आवाज़ें निकालकर शोर मचाते हैं। किसी पेड़ के खोखले तने में तिनके, कपड़े के टुकड़े आदि बिछाकर ये अपना घोंसला बनाते हैं। मादा 4 से 6 तक सफ़ेद अंडे देती है।

☐ अरविंद गुप्ते

(चित्र सौजन्य : नेचुरल हिस्ट्री सोसायटी, बम्बई)

चलते-फिरते तथ्य

पौधों का चलन

दीपंकर गोस्वामी
इंडस्ट्रियल डिजाइन सेंटर, बम्बई.



पेड़-पौधे अपनी ज़िंदगी एक जगह पर गुज़ारते हैं। उनको भोजन की तलाश में यहां-वहां भटकने की ज़रूरत नहीं पड़ती क्योंकि वे ख़ुद अपना खाना बनाते हैं।

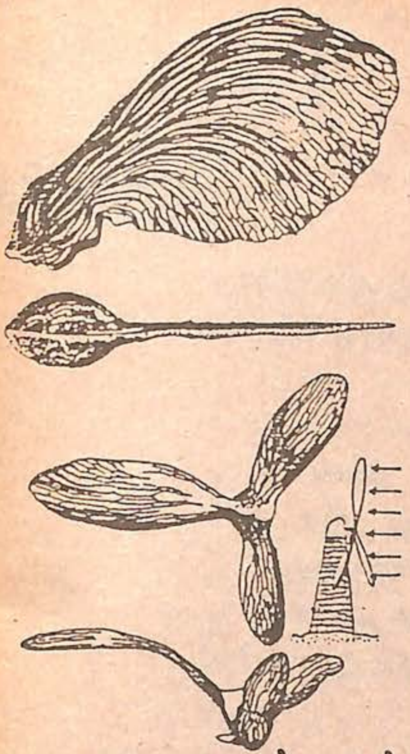
यह एक मज़े की बात है कि पेड़-पौधे चलते-फिरते तो हैं नहीं फिर वे सारी दुनिया में कैसे फैल गए? इसका उत्तर है बीज प्रकीर्णन यानी बीजों का बिखरना। पौधे भले ही न चलें, पर उनके बीज हवा, पानी, ज़मीन और अन्य माध्यमों से दूर-दूर तक फैल जाते हैं। यही पौधों की 'चाल' है और इस 'चाल' के विभिन्न तरीके हैं।

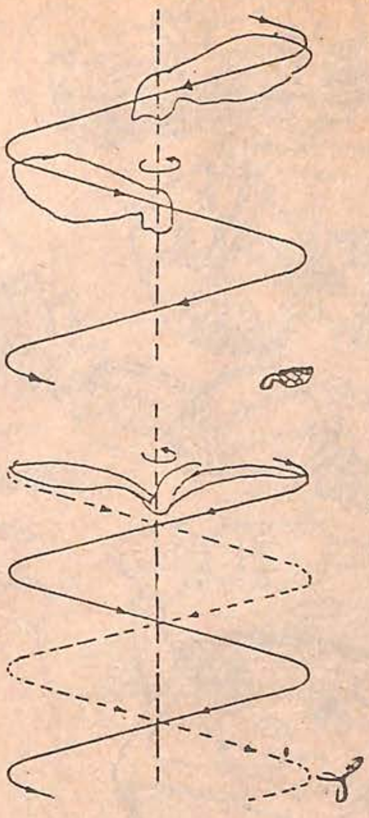
क्या तुम यक़ीन करोगे?

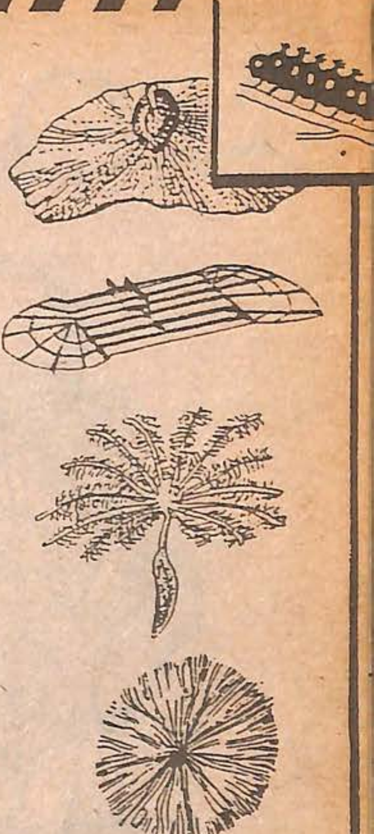


सनड्यू नामक पौधे की पत्तियां आम पत्ती जैसी नहीं दिखतीं, उनका आकार अलग तरह का होता है। पर ये पत्तियां गतिशील होती हैं। जब कोई कीड़ा उन पर बैठता है तो पत्तियां उसे दबोच लेती हैं।

नारियल समुद्र में बहकर 3000 किलोमीटर से भी अधिक की दूरी तय करता है। तुमने देखा होगा कि आमतौर पर समुद्र तट के किनारे नारियल के पेड़ अक़्सर पानी की ओर झुके रहते हैं। जब नारियल पकता है तो पानी में गिरकर दूर-दूर तक पहुंचता है। फल खोखला और रेशेदार होने के कारण हलका होता है। उसकी ऊपरी सतह पर मोम जैसा पदार्थ भी चढ़ा रहता है। जो उसे डूबने से बचाता है।







वनस्पति जगत के उड़ाके

दूर-दूर क्षेत्रों में पहुंचने के लिए फल और बीज हवा का व्यापक उपयोग करते हैं। हवा में सफ़र करने के उनके विभिन्न तरीके हैं। कुछ हवा की धारा पर बहते हैं, कुछ अपने पंखों से उड़ते हैं और कुछ पैराशूट की तरह ज़मीन पर उतरते हैं।

समारा नामक फल के एक या अधिक पंख होते हैं। हवा के झोंके से वह पेड़ से अलग होकर ज़मीन पर गिरता है। बीज बहुत कड़ा होता है। गिरते वक़्त वह लट्टू जैसा घूमता है। गिरते वक़्त उसका पथ एक संकरी कुंडली जैसा होता है। कुंडली पथ का आकार भी इस बात से तय होता है कि बीज का एक पंख है या अधिक। एक पंख बीज का पथ एकल कुंडली होता है। जबकि तीन पंख बीज का पथ द्विकुंडली होता है। समारा बीज एक तरह की पवन चक्की है। अंतर बस इतना है कि पवन चक्की स्थिर होती है, इसलिए हवा उसके पंखों को पार करके बहती है। जबकि समारा बीज हवा को पार करके उड़ता है। चित्र देखो!

जावा में *खजूर* के ऐसे पेड़ पाए जाते हैं जिनके फलों के चारों ओर एक पाल नुमा रचना लगी रहती है। इस पाल की मदद से फल हवा में ग्लाइड करता है। आदमी ने इसी सिद्धांत पर ग्लाइडर बनाया।

बिनौला (कपास का बीज) जैसे कुछ बीज हैं जिनकी पूरी सतह रोएंदार रेशों से ढकी रहती है। अपने साइज के हिसाब से यह बीज बहुत हल्का होता है। इसलिए यह हवा की धारा पर दूर-दूर तक उड़ सकता है।



तरीके और भी हैं

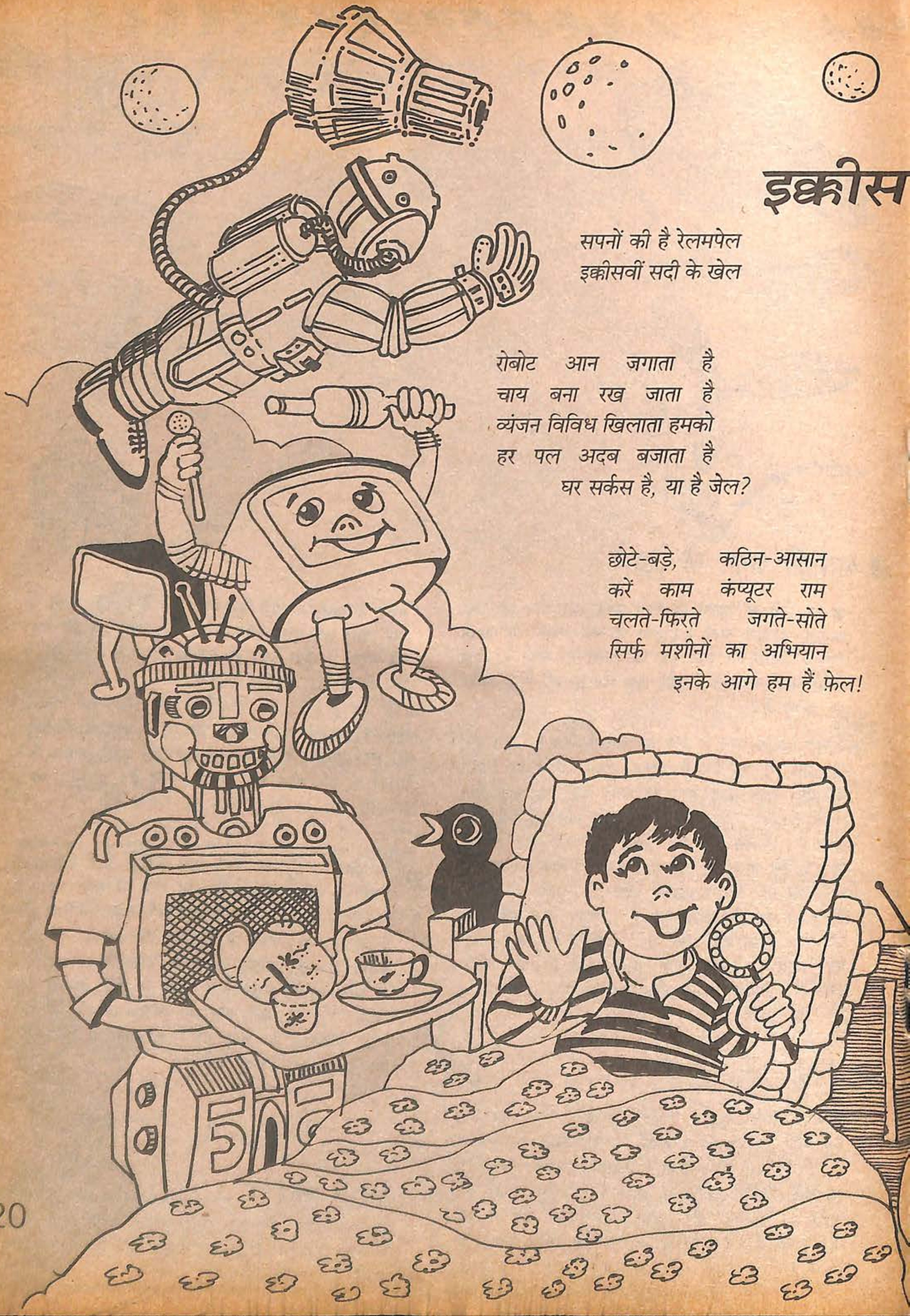
गांव में तुमने *गोखरू* तो देखा ही होगा। वह एक तरह का बीज है। वह हमारे कपड़ों में चिपककर अनजाने में ही दूर-दूर तक चला जाता है। इसके अलावा कई बीज जानवरों, चिड़ियों आदि के माध्यम से अपना सफ़र तय करते हैं। जानवरों और चिड़ियों के मल या बीट में कई बार अपचे बीज निकलते हैं, जो अंकुरित होकर नया पौधा बनाते हैं।

पिचकारी ककड़ी का पका फल ककड़ी जैसा दिखता है। फूल का डंठल कार्क की तरह फल में धंसा रहता है। जब फल पकता है तब उसका गूदा एक चिपचिपे तरल पदार्थ में बदल जाता है जो फल के छिलके पर दबाव डालता है। इस भीतरी दबाव के कारण जब फल डंठल से अलग होकर गिरता है तो अंदर के बीज वैसे ही बाहर निकल पड़ते हैं, जैसे सोडे की बोतल खोलने पर सोडा बाहर निकलता है। बीज इतनी तेज गति से निकलते हैं कि दूर-दूर तक बिखर जाते हैं।



आओ खेलें

एक पोलीथीन शीट का टुकड़ा लेकर उसके चारों कोनों में धागा बांधकर एक पत्थर बांधो। फिर पैराशूट की तरह उड़ाओ।



इक्कीस

सपनों की है रेलमपेल
इक्कीसवीं सदी के खेल

रोबोट आन जगाता है
चाय बना रख जाता है
व्यंजन विविध खिलाता हमको
हर पल अदब बजाता है
घर सर्कस है, या है जेल?

छोटे-बड़े, कठिन-आसान
करें काम कंप्यूटर राम
चलते-फिरते जगते-सोते
सिर्फ मशीनों का अभियान
इनके आगे हम हैं फ़ेल!

वीं सदी



अंतरिक्ष-यान में उड़ते
कभी फैलते, कभी सिकुड़ते
अंतरिक्ष में या धरती पर
स्वेच्छा से हम खूब विचरते
सैर सपाटे, ठेलमठेल!

हैं वाकी-टाकी के मंजर
कंप्यूटर जी ही हैं टीचर
रटो पाठ बस टिकिया खाकर
माथापच्ची का क्या चक्कर
सोओ डाल कान में तेल!



चकाचौंध नायाब नज़ारा
इक्कीसवीं सदी का नारा
कहीं न बनकर रह जाए यह
भानुमती का महज पिटारा
हम झुनझुने या अमरबेल?

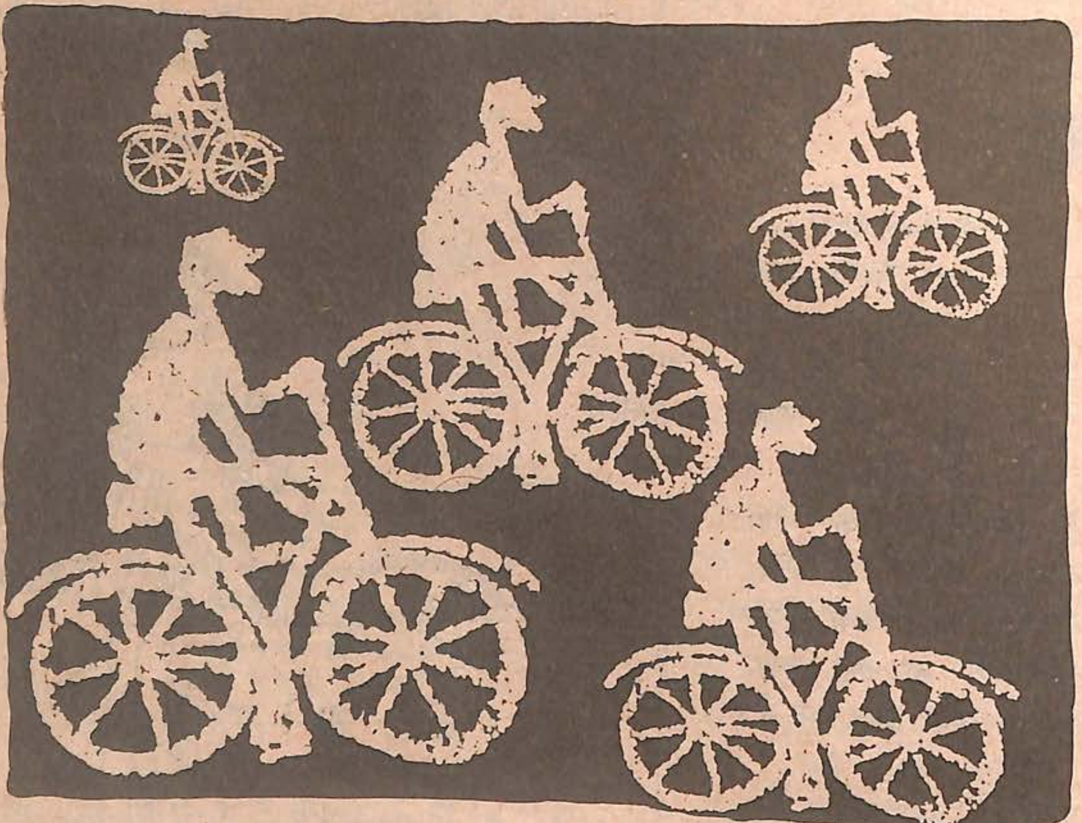
☐ भगवती प्रसाद द्विवेदी

चित्र : विवेक





जनचेतना शिविर और साइकिल जत्था



संयुक्त राष्ट्र संघ ने वर्ष 1990 को अंतर्राष्ट्रीय साक्षरता वर्ष घोषित किया है। संयुक्त राष्ट्र संघ के आह्वान पर और अपने देश की ज़रूरतों को ध्यान में रखकर भारत में भी साक्षरता संबंधी कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं।

भारत सरकार के मानव संसाधन मंत्रालय ने अखिल भारतीय जनविज्ञान मंच और अन्य स्वैच्छिक संस्थाओं को लेकर भारत ज्ञान-विज्ञान जत्थों का आयोजन किया है।

इसके अंतर्गत देश के प्रत्येक ज़िले में साक्षरता संबंधी गतिविधियां की जाएंगी। मध्यप्रदेश में भी सभी जिलों में 120 से लेकर 150 केंद्रों पर तथा उनसे संबंधित लगभग 750 गांवों में साक्षरता संबंधी गतिविधियां की जाएंगी। ये गतिविधियां 2 अक्टूबर से 15 नवंबर तक चलेंगी। इसके लिए हर ज़िले में एक ज़िला स्तरीय समिति का गठन किया गया है।

इसी सिलसिले में देवास ज़िले की भारत ज्ञान-विज्ञान समिति ने एक जन-चेतना शिविर का आयोजन किया। देवास समिति का नेतृत्व एकलव्य (देवास केंद्र) कर रहा है। शिविर के बाद जन-चेतना, साइकिल जत्थे भी निकाले गए। प्रस्तुत है इनकी संक्षिप्त रपट!

जन-चेतना शिविर

देवास ज़िले की सभी तहसीलों के लगभग 100 युवाओं ने, जिनमें छात्र, शिक्षक तथा अन्त व्यवसायों से जुड़े लोग थे, इस शिविर में भाग लिया।

बारह दिवसीय यह शिविर हाटपीपल्या के पाटीदार छात्रावास में 11 मई से 22 मई, 90 तक रखा गया था।

शिविर का मुख्य उद्देश्य ज्ञान-विज्ञान जत्थे की तैयारी था। इस बात को ध्यान में रखते हुए, शिविर में समूह गीत तथा नुक्कड़ नाटक की विशेष रूप से तैयारी कराई गई। एक नाटक सांप्रदायिकता और दूसरा वनों के विनाश और उससे पैदा होने वाली समस्या को लेकर था। इसके साथ-साथ शिक्षा के स्वरूप, शिक्षा प्रशासन की खामियां, भ्रष्टाचार, जनसंख्या की समस्या, सांप्रदायिकता, परिवर्तन आदि जैसे विषयों पर भी चर्चा की गई। विभिन्न विषयों पर पोस्टर प्रदर्शनी तथा वीडियो फ़िल्म भी दिखाई गई।

गाँवों में अभी भी अशिक्षा व पिछड़ापन व्याप

देवास (निप्र)। जिले के ग्रामीण जनों में साक्षरता के लिए जन जाग्रति लाने के उद्देश्य से भारत ज्ञान विकास जत्था द्वारा २५ मई से ५ जून तक की अवधि में साइकल भ्रमण के दौरान देवास जिले के गाँववासियों से रूबरू होकर जो अनुभव किया गया उस अभिव्यक्ति को जत्थों
कार रहे संयोजकों
मंदिर में आयोजित क
स्मरण के रूप में बताय
पर कलेक्टर श्री मिथन
के अधिकारीगण एवं
सदस्यगण उपस्थित थे। स
"सबसे सस्ता गोश्त" नुक्क
भी प्रस्तुत किया।

सामिति के इस आयोजन में साइकल जत्थों ने जिले के १५७ ग्रामों की यात्रा में पाया कि गाँवों में आज भी बाल वि
शिक्षा, निरक्ष
छुआछ

एकलव्य संस्था के
द्वारा



कलेक्टर श्री मिथनसिंह
सर पर जत्थों के स
य उत्साह की सराह
कहा कि समाज
ा की दिशा में साइक
र-गाँव घूमकर स
ाने का यह अच्छा प्र
उनका सदैव योग
हेगा। कार्यक्रम
क्षा, महिला ए
न-संपर्क विभ
भी अपने प्रे
हुए शास
ग्रामवासि
ाने वाले

क शिविर का भी आयोजन किया
इस जत्थे के भ्रमण के दौरान शि
वरण सांप्रदायिक एकता से जुड़े नाटक
, पोस्टर, प्रदर्शनी इत्यादि के आयोजन
निर्णय लिया गया।

इसमें प्रमुख रूप से नाटक प्रस्तु
ए गए जागो-जागों व पर्यावरण । इनमें
ीण भाईयों को अपने पर्यावरण एवं
धिकारों के प्रति.जाग्रत करने हेतु विस्तृत
रूप में स्पष्टतः बताया गया कि किस
ार हमारे देश में व्यापक स्तर पर जंगलों
सफाया हो रहा है तथा 'सूखा राहत"
नाम पर किस प्रकार
वधाओं का

का भ्रमण

के ग्रामीण जनों में
ता के लिए जन जाग्रति लाने के उद्देश्य
भारत ज्ञान विकास जत्था द्वारा २५ मई
५ जून तक की अवधि में साइकल
भ्रमण के दौरान देवास
सियों
से रूबरू
उस
रहे

भारत ज्ञान विज्ञान समिति
आयोजन में सायकल जत्थों ने जि
१५७ ग्रामों के बीच से गुजरते अपने
में पाया कि गांवों में आज भी बाल
प्रौढ़ शिक्षा, निरक्षरता, अस्वच्छता, छु
व स्वास्थ्य सुरक्षा के प्रति जागरूक
है। शासन की विभिन्न योजनाओं के
गांववासियों के लाभ हेतु करोड़ो
राशि व्यय हो रही है उसका लाभ
अभी भी अछूते हैं।

जिला कलेक्टर श्री मिथन
इस अवसर पर जत्थों के सदस्यों के
उत्साह की सराहना की। आपने
समाज सेवा व साक्षरता की
साइकल भ्रमण से गांव-गांव घूम स
लाने का यह अच्छा प्रयास है
उनका सदैव योगदान एवं
कार्यक्रम में आए स्वास्थ्य,
एवं बाल विकास, जन
के अधिकारियों ने भी
विचार रखते हुए शा
ग्रामवासियों को ल
कार्यों की जानकारी
कार्यक्रम के अंत में संस्था
से आए सदस्यों के साथ आपस
संगोष्ठी एवं प्रस्तावित आगामी
पर चर्चा की गई।

देवास (नि.प्र.)। साक्षरता
भारत ज्ञान विज्ञान समिति द्वारा
अभियान

निरक्षरता के विरुद्ध

क होते
उसमें अपना व्यापक
है तथा इसी सहयोग
चेतना का व्यापक
ा था।
तय
सर्वाधिक
गया
के प्रम
चित्र
इस
उदय होने के
प दिया जाता
शायद इतनी



सिर्फ लिखना, पढ़ना
ही शिक्षा नहीं है, अ
महज शिक्षा की शु
जिसका फैलाव बहुत दूर
है। शिक्षा एक समझ है, न
और एक ताकत है। य
ताकतवर हथियार भी है, जो
तिलस्मों, षड्यंत्रों और अज्ञान
को समाप्त कर मनुष्यों को पूर्णता
प्रदान करता है। शिक्षा- साक्षरता,

साक्षरता के
प्रकाश डाला। उन्होंने
की कि २ अक्टूबर से १४
जत्थे
ग्रामीण
समूह गीत,
नाटक, कविता पाठ आदि के
माध्यम से ग्रामीणों में जनचेतना का
संचार किया। इन युवा साथियों ने
करीब डेढ़ हजार किलोमीटर की

ज्ञान-विज्ञान समिति द्वा
जन-चेतना जत्थे

पहुंचाया गया,

साक्षरता के लिए जन चेतना अभियान जारी

देवास, (निप्र)। भारत ज्ञान ...स समिति के सायकल जत्थों ने ...के १५७ ग्रामों के बीच से गुजरते ...ी यात्रा में पाया कि गांवों में आज भी ... विवाह प्रौढ़ शिक्षा ... च्छना ...

कलेक्टर मिथनसिंह ने इस ... पर जत्थों के सदस्यों ... की सराह...

हाटपीपल्या, (निप्र)। भारत ज्ञान-विज्ञान समिति देवास जिला द्वारा २५ मई से ५ जून तक जिले में जनचेतना सायकल जत्थे का आयोजन किया जा रहा है। इस कार्य... ...तर्गत जिले ... ० गांवों में ...कता पर ... करेंगे। ...धारी ... गीत, ... व ...नी



...हे ...न ...जि ...ला ...त ज्ञा ...५ जून ...ण के ...वासियों ...। उग अ... ...च कर रहे ...र में आयो ...ण के रूप मे ... कलेक्टर मि... ...धकारीगण एवं ... ...स्थित थे। इस ... सबसे सस्ता गो... प्रस्तुत किया गया।

जिला एकलव्य ...ति के संयोजक डा ...बताया कि जिले के ...ीण क्षेत्रों में साक्ष... से एकलव्य सं... ...थे सायकलों द्वा... ०० कि. मी. ...ों के ग्रामीण ...यों द्वारा ... ...कड़ नाटक ...ध्यम से सा... ... जाग्रति ... ...न उन्हें ...नाइयों ...स्याओं ... अपने ... अने...



देवास

...ों में साक्षरता के लिय ... ...ग्रति लाने के उद्देश्य से समित ... ...रत ज्ञान विकास । जत्था सायकल जत्थों ने जिल...

एक ताकत है शिक्षा

...ध ...रान ...सियाँ ... होकर जो शिक्षा, निरक्षरता, अस्वच्छता ... जत्था ... ग्राम- के समक्ष नुक्कड़ नाटक लोकगीत व संगोष्ठी

इन जत्थों की तैयारी हेतु हाटपीपल्या में १२ दिवसीय शिविर का आयोजन किया गया था, जिसमें ७५ युवा साथियों ने भाग लिया था। इन संस्थाओं का उद्देश्य उत्साही युवा साथियों का कार्यक्रम तैयार करना तथा साक्षरता अभियान को गति देना है।

पीपलरावाँ (निप्र)। भारत जन-विज्ञान समिति द्वारा एकलव्य देवास से जुड़े युवाओं द्वारा देवास जिले की ६ तहसीलों से लगभग ७५ उत्साही युवा साइकल जत्थे के रूप में चल रहे हैं।

इन्ही जत्थों में से एक जत्था श्री कौशिक तथा श्री चेतन उपाध्याय के निर्देशन में पीपलरावाँ पहुँचा। भारत जन-विज्ञान समिति पीपलरावाँ ब्लाक समिति के संयोजक श्री अशोक ...रू ने नगर सीमा पर अपने ...थियों सहित स्वागत किया। ...कल जत्थे ने सर्वप्रथम ग्राम में ...ली निकालकर अपने उद्देश्यों का ... किया। तत्पश्चात इतवारिया ... में मंचीय कार्यक्रम हुए। जत्थे द्वारा दो नाटक 'जागो-जागो' तथा 'सबसे सस्ता गोश्त' जनता द्वारा काफी सराहे गए। सामूहिक गीत मंदिर, मस्जिद, गिरजाघर ने बाँट लिया भगवान को आकर्षक रहा। श्री कौशिक ने ... कि हमारे कार्यक्रम

एक सोच, एक समझ

दम लेते हैं। साइकल जत्थे के युवाओं ने बताया कि उन्हे प्रतिदिन १० से २० कि.मी. साइकल चलाना पड़ती है। भोजन की व्यवस्था गाँव वाले अपने अनुसार ही करते हैं। इन्हें किसी की शासकीय सहायता नहीं ...है। कार्यक्रम के अंत में श्री ...वैद्य ने आभार प्रदर्शन किया।

देवास। साक्षरता ... ...तावरण बनाने के लिए ...ारत ज्ञान विज्ञान समिति द्वारा इन दिनों सारे देश में एक बड़ा अभियान चलाया जा रहा है इसके तहत पिछली २५ मई से जनचेतना के ६ साईकिल जत्थों के माध्यम से जिले के १३० गांवों में शिक्षा पर्यावरण साम्प्रदायिकता से जुड़े मुद्दों पर नुक्कड़ नाटक व गीत प्रस्तुत किये जा रहे हैं ६ जून को ये सभी जत्थे अपना भ्रमण पर देवास पहुच रहे है।

इसी दिन नगर के प्रमुख मार्गों से ४ बजे एक रैली

अधिकांश शिविरार्थी पहली बार इस तरह के कार्यक्रम में आए थे। कईयों ने इसके पहले कभी किसी नाटक में भाग नहीं लिया था। उनमें एक खास तरह की झिझक भी थी। लेकिन, उन्होंने बहुत जल्दी सब कुछ सीख लिया और सारी गतिविधियों में दूसरे साथियों की तरह ही भाग लेने लगे। उनकी सारी झिझक मिट गई। इस तरह शिविर के माध्यम से यह सिद्ध हुआ कि अगर ठीक वातावरण उपलब्ध करवाया जाए तो कोई भी व्यक्ति कुछ भी सीख सकता है।

शिविर के दौरान साप्ताहिक हाट के दिन हाटपीपल्या में ही छह अलग-अलग स्थानों पर नाटक और समूह गीत का प्रदर्शन किया गया। इससे शिविरार्थियों को न केवल अपने काम की खामियां समझ में आईं वरन्, उन्हें दूर करने में भी मदद मिली।

शिविर के अंतिम दिन सभी साथी अपने-अपने समूहों में हाटपीपल्या के आसपास के छह गांवों में गए. वहां भी उन्होंने अपने कार्यक्रम प्रस्तुत किए।

शिविरार्थियों ने साफ-सफाई, भोजन व्यवस्था संभालने के साथ-साथ, अपने-अपने समूह के दीवार अखबार भी निकाले। जिनमें मज़ेदार समाचारों के अतिरिक्त अन्य सामग्री भी होती थी।

शिविर आयोजन में सर्वश्री हफीज़खान (राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, दिल्ली), उमाकांत द्विवेदी (प्राचार्य, केंद्रीय विद्यालय रामपुर), संतोष कौशिक (अंकुर मंच, उज्जैन), शुभेन्दु (दिल्ली, विश्वविद्यालय) तथा राजेन्द्र चावड़ा ने स्रोत व्यक्तियों के रूप में मदद की।

शिविरार्थियों की बात...

हमने *देखा कि अशिक्षा के अभाव में अंधविश्वास सामाजिक और धार्मिक कुरीतियां तथा जाति भेदभाव प्रचलित हैं। हमारे कई साथियों को जाति-भेदभाव के कारण गांव वाले भोजन करवाने में हिंचकिचाए और मंदिर में जाने से रोका। इससे हमारे साथियों ने अपने को अपमानित-सा महसूस किया। खैर ये तो पुरानी मानसिकता और धारणाएं हैं, जो शिक्षा के साथ-साथ समाप्त हो जाएंगी।*

☐ हरिभूषण जैन, हाटपीपल्या

ऐसे *शिविर हमेशा कहीं न कहीं लगने चाहिए। क्योंकि इन शिविरों में जो भी भाग लेता है, उसे सबसे पहले तो उसके अंदर छुपी हुई कला को उजागर करने का मौका मिलता है। और उसका मन हमेशा कुछ न कुछ नया करने को तैयार रहता है।*

साइकिल यात्रा के दौरान हमारे नाटकों को देखकर लोगों ने कई प्रकार के सवाल किए। जिससे लगा कि इस प्रकार के नाटक समय-समय पर करते रहना चाहिए।

☐ रजनीश कांत सक्सेना, हाटपीपल्या

समस्याएं *प्रत्यक्ष देखी व सुनी भी। निरक्षर व्यक्ति जो दूर-दराज़ के क्षेत्रों में रहते हैं शिक्षा के अभाव में शासन द्वारा प्रदत्त सुविधाओं का लाभ नहीं ले पाते हैं। अंधविश्वास भी जड़ जमाए हैं। कुपोषण के कारण कई गांवों में बच्चों का स्वास्थ्य बहुत कमज़ोर है।*

पानीगांव, बावड़ीखेड़ा, कलवार बधावा के आसपास के क्षेत्रों में जंगलों का विनाश चौंकाने वाला है। भूमि पर कृषि करने एवं स्थाई पट्टा पाने के लोभ में पेड़ काटे गए हैं।

☐ मनोज गुप्ता, पानीगांव

जन-चेतना साइकिल-जत्था

जन-चेतना शिविर में शामिल हुए युवकों ने सात जत्थों में बंटकर 25 मई से 5 जून तक जिले भर के 157 गांवों में साइकिल और पैदल यात्रा की। यात्रा के दौरान पर्यावरण, साक्षरता, सांप्रदायिकता, बेरोजगारी आदि मुद्दों पर केंद्रित नुक्कड़ नाटक, समूह गीत व चर्चा का आयोजन किया गया। 1500 किलोमीटर की इस यात्रा के दौरान कोई 30,000 लोगों ने इन कार्यक्रमों को देखा।

साइकिल यात्रा का समापन 6 जून को देवास में हुआ। सातों जत्थे देवास में एकत्रित होकर रैली की रूप में शहर भर में भ्रमण पर निकले। रैली के बाद छह जत्थों ने रात दस बजे तक देवास शहर के कोने-कोने में नुक्कड़ नाटक एवं गीत प्रस्तुत किए।

जत्थों की यात्रा के दौरान गांवों-कस्बों में दर्शकों द्वारा कई सवाल उठाए गए। इन सवालों का कोई तय उत्तर नहीं हो सकता। इन पर सभी को सोच-विचार करने की आवश्यकता है। तुम भी इन सवालों पर अपने आसपास चर्चा करो—

- ☐ *साक्षरता की ज़रूरत क्यों है?*
- ☐ *साक्षरता का मतलब क्या है?*
- ☐ *गांवों में छुआछूत व असमानता मिटाने का व्यवहारिक उपाय क्या है?*
- ☐ *पूर्ण साक्षरता का पूरी राजनैतिक परिस्थिति पर क्या असर होगा?*
- ☐ *आज़ादी के इतने सालों बाद भी साक्षरता क्यों नहीं फैल पाई?*
- ☐ *सरकार द्वारा अभी तक बनाए गए साक्षरता कार्यक्रम सक्रियता से लागू क्यों नहीं हो सके?*

तीन बिल्लियां



एक पूसी अपने तीन बच्चों के साथ रहती थी। एक का नाम था चितकबरी, एक का नाम कल्लू और तीसरे का भूरा। पूसी अपने बच्चों को बेहद प्यार करती थी। वह उनका बहुत ख़्याल रखती थी, बड़ी सावधानी से लालन-पालन करती थी। स्कूली उम्र के होने पर पूसी ने अपने तीनों बच्चों को स्कूल में भरती करा दिया। तीनों एक ही कक्षा में भरती हो गए।

वे स्कूल में ही रहने लगे और खुशी-खुशी पढ़ने-लिखने लगे। वहां वे खूब मोटे-ताज़े हो गए और गरमी की छुट्टियों में मां से मिलने घर आए।

पूसी जानना चाहती थी कि उसके बच्चों ने स्कूल में क्या सीखा है। एक दिन उसने बच्चों से पूछा, "क्या तुम स्कूल में अच्छी तरह रहते हो और अच्छी तरह पढ़ते-लिखते हो?"

तीनों बच्चे भरपेट नाश्ता कर चुके थे और बिलकुल मस्त होकर बैठे थे।

भूरा, जो हमेशा सबसे आगे रहने की कोशिश करता था, बोल पड़ा, "हमने ढेर सारी किताबें पढ़ी हैं।" चितकबरी ने कहा, "हमने गाना और चित्र बनाना भी सीख लिया है।" कल्लू बोला, "हमारे स्कूल में खेलकूद-व्यायाम की व्यवस्था भी है।" भूरा खुश होकर फिर बोला, "अगर हम इसी तरह पढ़ते-लिखते रहे, तो जल्दी ही हमें सारी दुनिया की जानकारी प्राप्त हो जाएगी।" उसकी बात ख़त्म होते ही चितकबरी बोली, "इस तरह हम बहुत बड़े विद्वान बन जाएंगे।"

बच्चों की बातें सुनकर मां बहुत खुश हुई। पर उसे संदेह था कि वे सच बोल रहे हैं या नहीं। उसने पूछा, "बड़े होने पर तुम लोग इतने बड़े विद्वान बनकर क्या करोगे?"

चितकबरी बोली, "मैंने इस सिलसिले में अभी कुछ नहीं सोचा!" कल्लू बोला, "मैं सब काम कर सकता हूं।" भूरा कुछ देर सोचने के बाद बोला, "ज्ञान ही सब कुछ होता है। ज्ञान प्राप्त करने से ही सम्मान मिलता है। हमें और कोई काम करने की ज़रूरत नहीं है।"

पूसी ने देखा, किसी भी बच्चे ने श्रम के बारे में कुछ नहीं कहा। इसलिए उसने दूसरा सवाल पूछा, "क्या तुम्हारे अध्यापकों ने श्रम के बारे में तुम्हें कुछ नहीं बताया?"

इस बार भी सबसे पहले भूरा ही बोला "हां मां। मैं जानता हूं कि 'श्रम' शब्द कैसे लिखा जाता है। मैं उसे पढ़ भी सकता हूं। श्र..म श्रम।"

"म्याऊं!" कल्लू म्याऊं ने तिरस्कार के स्वर में कहा। "इसे मैं भी लिख सकता हूं।"

"मैं भी लिख सकती हूं!" चितकबरी बोली।

मां को लगा, उसके बच्चों के दिमाग़ में कोई न कोई ग़लत विचार अवश्य घुस गया है। यह सोचकर वह बहुत परेशान थी कि उसके बच्चों को दुनिया की असली हालत के बारे में कुछ भी पता नहीं है। वह बहुत चिंतित थी। इसलिए बच्चों के बारे में पक्की राय कायम करने से पहले उसने फिर पूछा,

"क्या तुममें से कोई यह बता सकता है कि श्रम करने से क्या-क्या फ़ायदे होते हैं? इस शब्द को केवल पढ़ लेना या लिख लेना ही काफ़ी नहीं है।"

इस बार भूरा कुछ नहीं बोला। चितकबरी गरदन एक तरफ लटकाकर सोचने लगी।

पूसी ने कुछ सोचकर पूछा, "क्या तुम सबको मछली खाना पसंद है?"

"क्यों नहीं! ज़रूर पसंद है!" मां के इस सवाल पर भूरे को कुछ अटपटा अवश्य लगा। "मैं तीन मछलियां एक साथ खा सकता हूं।"

"मैं इतनी ज़्यादा मछलियां एक साथ हरगिज़ नहीं खा सकती," चितकबरी बोल पड़ी। "इससे तो मेरा

पेट ख़राब हो जाएगा। मैं एक बार ज़्यादा से ज़्यादा दो मछलियां खा सकती हूं।''

तभी कल्लू चिल्लाया, ''तुम्हारी बात तुम जानो! मैं तो मौका आने पर एक साथ पांच मछलियां भी खा सकता हूं।''

''कौन कितनी मछलियां खा सकता है, इसके बारे में डींग मारने से कोई फ़ायदा नहीं होगा। तुम्हें पहले मछली पकड़ने की कोशिश करनी चाहिए। मेरा ख़्याल है, आज तुम्हें कुछ मछलियां ज़रूर पकड़ लेनी चाहिए। अगर तुम एक भी मछली पकड़ लाओगे, तो आज शाम के खाने में हम लोग मछली खा सकेंगे।



साथ ही मैं यह भी देखना चाहती हूं कि तुम कोई काम कर भी सकते हो या नहीं।''

पूसी के तीनों बच्चे राजी हो गए। वे अपने को होशियार तो बहुत ज़्यादा समझते थे, पर दिमाग़ का इस्तेमाल कभी नहीं करते थे। मछली पकड़ने के तरीके के बारे में उन्होंने कोई पूछताछ नहीं की और एक भी उपकरण उठाए बिना नंगे पांव बाहर निकल गए।

बिल्ली के तीनों बच्चे यह नहीं जानते थे कि मछली पकड़ने के लिए उन्हें आख़िर कहां जाना चाहिए? वे लगातार चलते गए, पर उन्हें कहीं मछली की परछाईं भी नजर नहीं आई। अंत में तीनों एक जगह बैठ गए और दिमाग़ लड़ाने लगे। भूरे को कुछ याद आ रहा था। उसने किसी किताब में पढ़ा था, मछलियां नदी, झील या समुद्र में रहती हैं। वे तीनों यह भी नहीं जानते थे कि नदी, झील या समुद्र का पता आख़िर कैसे लगाया जा सकता है? उन्हें पहले कभी न तो घर से बाहर निकलने का मौका मिला था और न किसी नदी, झील या समुद्र को देखने का। वहां पहुंचने का उन्हें कोई उपाय नहीं सूझ रहा था।

वे फिर चलने लगे। चलते-चलते वे अपने आसपास की चीज़ों को भी देखते जा रहे थे। लगातार चलते रहने के कारण वे बहुत थक गए और उन्हें भूख लग आई। जब तीनों एक पहाड़ी पर एक छोटे-से सोते के पास पहुंचे, तो भूरा खुशी से चिल्ला पड़ा, ''यह देखो, यह नदी है! हमें नदी मिल गई है!''

''तुम सचमुच बड़े होशियार हो,'' चितकबरी ने समर्थन किया। ''यह ज़रूर कोई नदी है, क्योंकि यह न तो झील है और न समुद्र। लेकिन इसमें मछलियां क्यों नहीं दिखाई दे रहीं?''

कल्लू ने ग़ौर से देखा और तपाक से बोला, ''अरे तुम्हें अपने भाग्य को सराहना चाहिए! अच्छा है कि इसमें कोई मछली नहीं है। अगर होती, तो उसे पकड़ते कैसे?''

बिल्ली के वे तीनों बच्चे सोते के किनारे गुमसुम खड़े थे। अब क्या किया जाए? उनकी अक्ल बिलकुल काम नहीं कर रही थी।

''हमें कुछ देर यहां बैठकर इंतज़ार करना चाहिए। इस नदी में मछलियां ज़रूर मिलेंगी,'' चितकबरी बोल पड़ी।

''ठीक है, जब मछलियां दिखाई देंगी, तो हम पानी में कूद पड़ेंगे और उन्हें पकड़ लेंगे,'' कल्लू ने कहा।

तीनों बेहद थक गए थे। इसलिए चाहे मछली मिले या न मिले, वहां बैठकर आराम ज़रूर करना चाहते थे। तीनों उस चमकदार सोते की तरफ टकटकी बांधकर देखते रहे। उनकी आंखें थक गईं, लेकिन मछली कहीं नज़र नहीं आई।

भूरे ने आंखें मूंदकर बड़ी तकलीफ के साथ कहा, ''म्याऊं! इतनी छोटी उम्र में मां को छोड़कर बाहर आना और मछली पकड़ना हमारे लिए कितना मुश्किल काम है!''

कल्लू बोल पड़ा, ''मुझे इस तरह श्रम करने का कोई फ़ायदा नजर नहीं आता।''

चितकबरी बोली, ''अगर हमें जल्दी ही मछली न दिखाई दी, तो मुझे रोना आ सकता है। लेकिन मैं रोना-बिलखना नहीं चाहती।''

तभी एक घटना घटी। एक चूहा थका-हारा एक पेड़ के नीचे झपकी ले रहा था। बिल्लियों की बात

सुनकर उसकी नींद खुल गई। पहले तो वह बिल्लियों की आवाज़ सुनकर बहुत घबराया लेकिन जल्दी ही उसे उनकी असलियत मालूम हो गई—उसे पता चल गया कि वे तीनों बिल्ली के बच्चे बिलकुल अनाड़ी हैं। अब वह उनसे डरने के बजाय उन्हें परेशान करने की तरकीब सोचने लगा। वह चाहता था कि पूसी-मां की इच्छा हरगिज़ पूरी न हो। बिल्ली के बच्चों का होशियार बनना चूहे की समूची बिरादरी के लिए बड़ा ख़तरनाक था।

बिल्ली के तीनों बच्चों को बेहद भूख लग रही थी। उनके मन में बार-बार घर लौटने और खाना खाने का विचार आ रहा था।

"मछली खाने में तो बड़ा मज़ा आता है, लेकिन उसे पकड़ना सचमुच बड़ा झंझट का काम है," कल्लू ने एक ठंडी आह भरते हुए कहा। "यह तो गणित के सवाल निकालने से भी ज़्यादा मुश्किल काम है।"

"मुझे परीक्षा में कम नंबर पाना मंजूर है, पर मछली पकड़ना नहीं," चितकबरी दुखी होकर बोली। "हमें मां को छोड़कर यहां नहीं आना चाहिए था। आखिर बच्चों को श्रम करने की क्या ज़रूरत है?"

"बिलकुल ठीक है!" सोते के उस पार से चूं-चूं की आवाज़ में कोई बोला। बिल्ली के बच्चों ने चारों तरफ देखा। सामने उन्हें एक भूरा जंतु पेड़ के नीचे बैठा दिखाई दिया। वह उनकी तरफ देखकर सिर हिला रहा था। सच बात तो यह थी कि उन्होंने चूहा पहले कभी देखा ही नहीं था। इसलिए उन तीनों ने उससे बड़े मैत्रीपूर्ण ढंग से पूछा, "तुम कौन हो भाई?"

"मैं एक विद्वान हूं। तुम्हारी बातें मुझे बड़ी अच्छी लग रही हैं। मुझे ताज्जुब हो रहा है कि तुम इतने होशियार कैसे बन गए। मुझे पक्का यकीन है कि तुम सब बड़े परिश्रमी विद्यार्थी हो।"

"मां कहती है, श्रम करना एक अच्छी बात है," चितकबरी बोली।

चूहे ने अपनी मूंछों पर हाथ फेरा और बोला, "क्या कहा? श्रम करना एक अच्छी बात है? चूं-चूं चूं-चूं, यह सब बिलकुल बकवास है। अगर तुम लोग श्रम करोगे, तो तुम्हें अपने हाथों का इस्तेमाल करना पड़ेगा। ठीक है ना? और क्या इस तरह तुम बेहद थक नहीं जाओगे?"

"लेकिन जब मैं कसरत करता हूं, तो बिलकुल नहीं थकता," कल्लू बोला। "लेकिन आज मैं सचमुच थक गया हूं। इसका मतलब यह है कि मैंने आज से श्रम करना शुरू कर दिया है।"

"देखा तुमने, मैंने कितनी सही बात कही है!" चूहे ने बड़ी धूर्तता से हंसते हुए कहा। वह खुशी से फूला न समाया और अपनें होश-हवास खोकर सोते के इस पार आने ही वाला था कि उसे अक्ल आ गई। "तुम सचमुच बड़े होशियार हो! एक बात और है। श्रम करने से तुम्हारे हाथ-पांव गंदे हो जाएंगे। ज़रा सोचो तो, अगर तुम गीली रेत पर पांव रखोगे, तो क्या तुम्हारे पांव गंदे नहीं हो जाएंगे?"

लेकिन कल्लू उसकी बात से सहमत न हुआ। "सुनो," वह बोला, "मुझे लंबी कुदान का अभ्यास करते समय रेत से सन जाना ज़रा भी बुरा नहीं लगता।"

"यह दूसरी बात है," चूहे ने बड़ी चालाकी से कहा। "लेकिन अगर मछली पकड़ते समय तुम्हारे पांव रेत से सन जाएंगे, तो तुम्हें कैसा लगेगा?"

"मैं रेत में मछली पकड़ूंगा ही नहीं!" कल्लू ने उत्तर दिया।



"लेकिन हमारी किताब में यह कहीं नहीं लिखा हुआ कि रेत में भी मछलियां होती हैं," भूरे ने आश्चर्य प्रकट करते हुए कहा।

चूहे ने उसे तिरछी नज़र से देखा। वह बोला, "तुम सचमुच कितने बुद्धिमान हो! हो सकता है, तुम्हारी किताब में ऐसा न लिखा हो। लेकिन जो किताब मैंने पढ़ी है उसमें तो यह लिखा है कि मछलियां रेत में भी होती हैं। खैर, हमें सवाल पर ज़्यादा बहस नहीं करनी चाहिए।

उसके बोलने की रफ़्तार लगातार बढ़ती गई। उसने अपनी बात जारी रखी, "बच्चो, एक बात और है। अगर तुम श्रम करते रहोगे, तो कभी आज़ाद नहीं रह सकोगे। क्या तुम आज़ाद नहीं रहना चाहते? अगर

तुम लोग आज़ाद होते, तो इस समय अपने घर होते और इस सड़ी गरमी में ठाठ से सोए रहते। तुम्हें श्रम करने के लिए बाहर आना पड़ा है और जिन मछलियों को तुम पकड़ना चाहते हो वे तुम्हारे पास नहीं फटक रहीं। ऐसी हालत में तुम अपने को आज़ाद कैसे कह सकते हो!''

''तुम ठीक कह रहे हो! बिलकुल ठीक कह रहे हो!'' बिल्ली के बच्चे एक स्वर से बोल पड़े। चूहे की बात सुनकर वे बहुत खुश हुए और उसकी सराहना करने लगे, ''तुम सचमुच कितने होशियार हो! सचमुच कितने अच्छे हो! क्या हमें अपना नाम नहीं बताओगे?''

चूहा अपनी चाल सफ़ल होती देख मन ही मन बहुत खुश हुआ। इसलिए बिना सोचे-समझे बोल पड़ा, ''मेरा नाम मिस्टर...,'' लेकिन वह अपना असली नाम बताने से पहले ही संभल गया। "मेरा नाम... क्या तुम लोग मेरा नाम जानना चाहते हो? मेरा नाम 'मुछन्दर महाशय' है। मैं एक बुजुर्ग विद्वान हूं। होशियार बच्चों को बुरी आदतों से बचना चाहिए।''

''चलो, घर चलें,'' कल्लू ने सुझाया।

''लेकिन मछली तो मिली नहीं! हम मछली पकड़े बिना घर कैसे लौटेंगे? मां ने हमें मछली पकड़ने भेजा है। यह बात हमें हरगिज़ नहीं भूलनी चाहिए। हमारी मां हमें सचमुच कितना प्यार करती है!'' चितकबरी बोली।

भूरे ने चूहे से पूछा, ''मुछन्दर महाशय, क्या हमें इस नदी में मछली मिल सकती है? इंतज़ार करते-करते हमें कितनी देर हो चुकी है!''

चूहे ने गुस्से का दिखावा करते हुए कहा, ''यह सवाल तुमने पूछ कैसे लिया? मैं तो समझता था कि तुम बड़े होशियार हो। मैं पहले ही बता चुका हूं कि तुम्हें मछली पकड़ने के चक्कर में नहीं पड़ना चाहिए। दूसरी बात यह है कि मैंने अपने जीवन में बहुत-सी मछलियां देखी हैं, पर यह कभी नहीं सुना कि उन्हें नदी में पकड़ा जाता है।''

"फिर उन्हें कहां पकड़ा जाता है?'' कल्लू ने पूछा।

अचानक चितकबरी को एक अजीब-सी महक आई। उसने सोचा, यह महक ज़रूर चूहे से आ रही है। उसने धीरे से काले म्याऊं से कहा, ''मुझे एक अजीब-सी महक आ रही है।'' कल्लू ने समर्थन किया।

चूहे ने देखा, बिल्ली के बच्चों को उस पर शक होने लगा है। इसलिए वह संभल गया और बोला, ''अच्छा, तो मैं चला। नमस्ते।'' चूहा सिर हिलाता हुआ जंगल में गायब हो गया।

बिल्ली के बच्चों को खाली हाथ घर लौटना पड़ा। घर लौटते-लौटते वे भूख से निढाल हो गए।



मां ने उनके लिए रात का खाना तैयार कर लिया था। उसे पक्का विश्वास था कि वे खाली हाथ लौटेंगे। खाना खाते समय तीनों बच्चे मां के सामने अपने कारनामों के बारे में खूब डींग मारने लगे।

मां उनकी बातें सुनकर हंसी और बोली, ''तुम सोचते हो कि तुम बहुत बड़े विद्वान हो। इसलिए श्रम को तिरस्कार की नज़र से देखते हो। मुझे तुम पर और तुम्हारे विद्वान मुछन्दर महाशय पर तरस आ रहा है। क्या तुम जानते हो कि तुम एक दुष्ट चूहे से बातें कर रहे थे? तुमने एक भी मछली नहीं पकड़ी, उलटे एक धूर्त चूहे को अपना दोस्त बना लिया और उसकी सलाह पर चलने लगे। तुम सचमुच कितने बुद्धू हो!''

बिल्ली के तीनों बच्चों का मुंह शर्म से लाल हो गया। लेकिन यह लाली तुम्हें नज़र नहीं आ सकती थी, क्योंकि बिल्लियों के मुंह पर बहुत-से बाल होते हैं। उन नन्ही बिल्लियों को अब पता चला कि दुनिया में और भी बहुत-सी सीखने लायक बातें हैं।

इसके बाद पूसी-मां के उन तीनों बच्चों ने अपनी मां से मछली पकड़ने का तरीका सीखने के साथ-साथ बहुत-सी दूसरी बातें भी सीख लीं।

□ येन वनचिङ

सभी चित्रः वाङ चीह्वा और माओ युङखुन

वृक्ष कैसे रोकते हैं मिट्टी को!

तुमने सुना होगा कि वृक्षों के कटने से हरी-भरी भूमि के बंजर होने का ख़तरा बढ़ता जाता है। वृक्ष न केवल स्वयं इस हरियाली का हिस्सा होते हैं बल्कि वे मिट्टी को भी बहने से रोकते हैं। वृक्ष मिट्टी को तेज़ पानी या आंधी में बह या उड़ जाने से कैसे रोकते हैं, यह तुम खुद प्रयोग करके देख सकते हो।

अपने आसपास कहीं खुली ज़मीन पर भूमि का एक टुकड़ा चुनो। टुकड़ा आधे वर्गमीटर का हो सकता है। इसे दो हिस्सों में बांट लो। एक हिस्से की ऊपर की मिट्टी खुरच कर निकाल दो और दूसरे को वैसा ही रहने दो।

अब दोनों भागों में भिगोई हुई राई के बीज बो दो। दोनों हिस्सों में नियमित रूप से सिंचाई करो। लगभग सात-आठ दिन बाद पौधों को ध्यान से देखो। किस भाग के पौधे अधिक स्वस्थ हैं? निश्चित ही जिस भाग की मिट्टी तुमने खुरची नहीं थी, उसके पौधे अधिक स्वस्थ होंगे। सोचो ऐसा क्यों हुआ!

अब किसी मैदान से 15 सें.मी × 10 सें.मी. × 5 सें.मी. आकार के ज़मीन के दो टुकड़े इस प्रकार निकालो कि उनका ऊपर का हिस्सा टूटे-फूटे नहीं! इनमें से एक टुकड़ा ऐसा होना चाहिए जिसमें घास ऊगी हो और एक ऐसा जिसमें घास न हो।

अब इन्हें किसी ऐसी जगह रखो, जहां इन पर से बहते हुए पानी को एकत्रित किया जा सके। यानि पानी डालने और एकत्रित करने का इंतज़ाम भी करना होगा।



अब थोड़ी ऊंचाई (लगभग-आधा फुट) से दोनों हिस्सों पर पानी की सिंचाई करो। बहते हुए पानी को अलग-अलग एकत्रित करो। बाद में दोनों का अवलोकन करो। देखो कि कौन से हिस्से का पानी अधिक मैला है? अब तुम्हीं सोचो कि कैसे पौधे, वृक्ष आदि मिट्टी को बहने से रोकते हैं।

तुमने सुना या पढ़ा होगा कि पहाड़ी क्षेत्रों में सीढ़ीदार खेत होते हैं। भला क्यों? वहां भी मुख्य कारण मिट्टी को बहने से रोकना है। सीढ़ीदार खेत इसमें कैसे मदद करते हैं, यह भी तुम प्रयोग करके देख सकते हो।

गीली मिट्टी से फ़र्श पर दो पहाड़ियां बनाओ। एक पहाड़ी पर सीढ़ीनुमा खेत बनाओ और दूसरी को वैसी ही आड़ी-तिरछी, ऊंची-नीची रहने दो। उन पर राई के बीज बो दो। नियमित रूप से सिंचाई करो और उनके अंकुरित होने का इंतज़ार करो। जब कुछ दिनों में बीज पौधे के रूप में उग आएं तब दोनों पहाड़ियों पर समान ऊंचाई से पानी छोड़ो।

ध्यान से पहाड़ियों का अवलोकन करो। जिस पहाड़ी पर सीढ़ीनुमा खेत नहीं हैं, उसकी मिट्टी पानी के साथ बहकर नीचे की तरफ आ रही है। जबकि सीढ़ीनुमा खेत की पहाड़ी पर पानी धीरे-धीरे बहकर नीचे आ रहा है!



धारावाहिक-12

भूगर्भ की यात्रा

अब तक तुमने पढ़ा...

प्रोफ़ेसर अपने एक सहायक और पथ प्रदर्शक के साथ भूगर्भ की यात्रा पर हैं। जब वे चलते-चलते यात्रा आरंभ करने के स्थान से 255 मील दूर और 48 मील की गहराई में पहुंचे तो सहायक उनसे बिछुड़ गया। उसका लैंप टूट गया। कई घंटे तक अंधेरे में भटकने के बाद वह बेहोश हो गया। जब होश आया तो उसने कुछ आवाज़ें सुनीं। वे प्रोफ़ेसर और हैंस की आवाज़ें थीं। फिर ध्वनि की गति के हिसाब के सहायक और प्रोफ़ेसर ने अपने बीच की दूरी का अनुमान लगाया। फिर सहायक अचानक गिरने से बेहोश हो गया। जब उसे होश आया तो वह प्रोफ़ेसर के साथ था। अब आगे पढ़ो....

''चाचा जी मैं आपसे एक सवाल पूछना चाहता हूं। यह बताइए कि क्या मैं पूरे होश-हवास में हूं!''

''तुम बिलकुल ठीक हो। इसमें कोई संदेह नहीं।''

''मेरा दिमाग़ तो ख़राब नहीं हो गया है?''

''कुछ भी नहीं हुआ है तुम्हें।''

''फिर भी मुझे लग रहा है कि मैं पागल हो गया हूं। क्या हम पृथ्वी पर नहीं हैं?''

''बिलकुल नहीं,'' चाचा जी बोले।

''तब तो वास्तव में मैं पागल हो गया हूं। मुझे दिन की रोशनी दिखाई दे रही है। हवा के बहने की और समुद्र की लहरों की आवाज़ सुनाई दे रही है।''

''अरे बस इतनी सी बात?''

''जी हां, लेकिन पहले मुझे यह समझाइये कि—''

''मैं तुम्हें कुछ नहीं बताऊंगा, क्योंकि मैं कुछ भी नहीं बता पाऊंगा। तुम खुद ही आकर देखो और तभी तुम्हारी समझ में आएगा कि भूगर्भशास्त्रियों को पृथ्वी की असीम गहराइयों के विषय में कुछ भी नहीं मालूम है।''

''तब फिर देखें चलकर,'' मैं एकाएक उठते हुए बोला।

''नहीं, नहीं, खुली हवा तुम्हें नुकसान करेगी।''

''खुली हवा।''

''हां, काफ़ी तेज़ चल रही है इस समय।''

''लेकिन मैं कह रहा हूं कि मैं बिलकुल ठीक हूं।''

''थोड़ा धीरज रक्खो मेरे बच्चे! ऐसे तुम फिर से अपनी शक्ति खो बैठोगे। हमें अब नहीं सोना है, क्योंकि अभी हमें एक लंबा रास्ता पार करना है।''

''पार करना है? क्या मतलब है आपका?''

''हां आज भर और आराम करो। फिर हमें जलयात्रा करने के लिए तैयारी करनी पड़ेगी।''



''जलयात्रा?'' यह शब्द सुनकर मैं उछल पड़ा।

''क्या मतलब है इसका? हमें पार करना है? नदी, झील या समुद्र? क्या कहीं कोई नाव भी मिल गई है?''

यह सब सुनकर मैं बड़ा उत्तेजित हो उठा। चाचा जी ने मुझे शांत रखने की काफी कोशिश की। लेकिन ऐसा कर न सके। आख़िर उन्हें चल पड़ने के लिए बाध्य हो जाना पड़ा। मैं कपड़े पहनकर जल्दी से तैयार हो गया।

पहले तो मैं कुछ नहीं देख सका। इतने तीव्र प्रकाश ने मेरी आंखें चकाचौंध कर दी थीं। जब मैं आंखें खोल सकने के योग्य हो पाया तो देखा कि सामने विशाल सागर लहरा रहा था। मेरी समझ में कुछ न आ रहा था। "समुद्र!" मैं चीख पड़ा।

"हां" चाचा जी बोले "समुद्र ही है। मैं सोचता हूं कि इसे अपने नाम से ही पुकारूं—लिडेनब्रांक सागर।"

ठंडी हवा धीरे-धीरे बह रही थी। समुद्र-तट पर सफ़ेद और साफ़ रेत फैली हुई थी। लगता था कि हम पृथ्वी पर ही खड़े हैं। सभी कुछ वैसा ही था जैसा पृथ्वी पर होता है—वैसा ही समुद्र, वैसा ही समुद्र-तट और वैसी ही पहाड़ियां। प्रकाश भी दिन में होनेवाले प्रकाश जैसा ही था लेकिन यह न तो सूरज का प्रकाश था और न चांद का ही। एकदम सफ़ेद और ठंडा प्रकाश। कहां से आ रहा था कैसे आ रहा था? कुछ पता नहीं।

वहां आकाश भी था। बादलों से ढका था। लगता था कि किसी भी समय पानी बरस सकता था। लेकिन यह वास्तविक आकाश नहीं था। कितनी बड़ी होगी यहां गुफा आप खुद सोच सकते हैं। यह गुफा किस चीज़ की बनी थी, कौन जाने। "क्या तुम थोड़ी दूर पैदल चल सकोगे?" चाचा जी ने पूछा।

"क्यों नहीं। ज़रूर चल सकूंगा," मैंने कहा, "इससे अच्छा क्या होगा।"

"मेरी बांह का सहारा ले लो और चलो।" मैं खुशी से तैयार हो गया। हमारे बाईं ओर पहाड़ियां थीं। इधर-उधर साफ़ पानी के झरने बह रहे थे।

उसी क्षण मैंने देखा जिनकी मुझे तनिक भी आशा न थी लगभग 500 क़दम पर ऊंचे-ऊंचे वृक्षों का एक जंगल। लेकिन कितने विचित्र थे ये पेड़। एक भी पत्ती नहीं थी उनमें। मैं उनकी तरफ बढ़ा। मुझे नहीं मालूम कि वे किस चीज़ के पेड़ थे। बाद में चाचा जी ने मुझे बताया कि ये कुकुरमुत्ते थे।

हम आधे घंटे तक उनके आस-पास ही घूमते रहे। उनके कारण हवा में ठंडक आ गई थी। आगे बढ़ने पर कुछ ऐसे पेड़ दिखाई दिए जो लाखों-करोड़ों वर्ष पहले पृथ्वी पर पाए जाते थे। एक अच्छा ख़ासा संग्रहालय था वहां। सिर्फ पौधों का ही संग्रहालय नहीं बल्कि पशुओं की हड्डियों का भी। लाखों वर्ष पूर्व पाए जाने वाले पशुओं की हड्डियां वहां चारों ओर बिखरी पड़ी थीं।

चलने से मैं कुछ थक-सा गया। थकावट मिटाने के लिए मैं थोड़ी देर बैठ गया। यहां बैठते ही तरह-तरह के विचार मेरे मन में आने लगे। यह समुद्र क्या था? यह कहां तक फैला था? क्या इसका दूसरा किनारा





हम देख सकेंगे? क्या इस जंगल में प्राणी नहीं हैं? दूसरे दिन जब मैं जगा तो काफ़ी ताज़गी का अनुभव कर रहा था। नाश्ता करके चल पड़ने के लिए तैयार हो गया। बाद में चाचा जी ने बताया कि पृथ्वी की तरह यहां के समुद्र में भी ज्वार-भाटा आता है। मुझे इससे बड़ा आश्चर्य हुआ।

मैं बोला, "बड़ी अजीब बात है।"

"नहीं," चाचा जी बोले "बिल्कुल अजीब नहीं है। यह तो बिलकुल स्वाभाविक है।"

"ठीक है," मैं बोला, "मुझे यह आश्चर्यजनक ही लगता है। सच तो यह है कि मुझे अपनी ज्ञानेंद्रियों पर विश्वास नहीं रह गया है। किसने सोचा था कि पृथ्वी के नीचे वास्तविक समुद्र होगा और वह भी ज्वार-भाटे के साथ। लेकिन चाचा जी, आपने अभी यह नहीं बताया कि हम हैं कहां पर।"

"अब हम," चाचा जी बोले, "आइसलैण्ड द्वीप से 1050 मील दूर हैं।"

"इतनी दूर?"

"हां, मुझे पूरा विश्वास है।"

"और कितनी गहराई में?"

"लगभग 100 मील।"

मैं नक्शे की तरफ देखकर बोला, "तब हम स्काटलैंड की पहाड़ियों के नीचे हैं।" चाचा जी ने मुस्कराते हुए मुझसे सहमति प्रकट की। "चाचा जी, अब आगे के लिए क्या विचार है? क्या अब आप पृथ्वी पर वापस लौट चलेंगे?"

"वापस लौट चलेंगे? लेकिन क्यों? कभी नहीं। बराबर चलते रहेंगे जब तक भाग्य हमारा साथ देता रहेगा।"

"लेकिन हम पानी के नीचे कैसे जाएंगे?"

"जहां तक समुद्र का सवाल है, कोई चिंता की बात नहीं। यह सिर्फ़ एक झील है और कुछ नहीं। इसके चारों ओर ज़मीन ज़रूर होगी।"

"हो सकता है," मैंने उत्तर दिया।

"मुझे पूरा विश्वास है कि दूसरी तरफ के तट पर हमें कोई नया रास्ता अवश्य मिलेगा।"

"हमें कम से कम कितनी दूर चलना पड़ेगा?"

"मेरे विचार से लगभग 100 मील । हमें कल ही चल देना है।"

"लेकिन हम किस नाव पर जाएंगे?" मैं बोला।

"नाव पर नहीं," चाचा जी ने उत्तर दिया, "बल्कि हम एक मज़बूत बेड़े पर चलेंगे।"

"लेकिन मैं देखता हूं कि न हमारे पास नाव है और न कोई मज़बूत बेड़ा ही।"

"हैंस हमारे लिए एक बेड़ा तैयार कर रहा है।"

"क्या? हैंस ने कुल्हाड़ी से पेड़ काट डाले?"

"नहीं, नहीं, मेरे साथ आओ, और देखो चलकर।"

पंद्रह मिनट तक चलते रहने के बाद हम उस स्थान पर पहुंचे जहां पर बेड़ा तैयार हो रहा था। मुझे आश्चर्य हुआ कि आधा बेड़ा तो तैयार हो चुका था। चाचा जी ने मुझे बताया कि यह पथराई हुई लकड़ी



का बनाया गया है जो कि पानी में बड़े मज़े से तैर सकती है। दूसरे दिन शाम के 7 बजे तक हैंस की होशियारी से बेड़ा तैयार हो गया। यह 10 फुट लंबा और 5 फुट चौड़ा था। आधे घंटे बाद ही हमारा बेड़ा "लिडेनब्रॉक के समुद्र" पर तैर रहा था। 13 अगस्त थी। सुबह हम जल्दी ही उठ गए। हमें अब एक नए और आसान रास्ते पर चलना था। अपना सारा सामान ठीक करके हम चलने के लिए तैयार हो गए। 6 बजे हम जल-यात्रा के लिए चल पड़े। कुछ समय तक हवा आदि का रुख़ देखते हुए हमने अपनी यात्रा की रफ़्तार का अंदाज़ा लगा लिया।

"यदि हम इसी तरह चलते गए," चाचा जी बोले, "तो हम 24 घंटों में लगभग 90 मील का सफ़र तय कर लेंगे।"

कुछ समय बाद हम बहुत दूर निकल आए, यहां तक कि तट अब हमें नहीं दिखाई दे रहा था। शाम हो गई थी, लेकिन पिछले दिन की तरह अंधेरा नहीं हुआ। रात और दिन यहां एक जैसे ही थे। प्रोफेसर लिडेनब्रॉक ने मुझसे प्रतिदिन की घटित होने वाली घटनाएं लिख डालने के लिए कहा—हवा की दिशा, यात्रा की रफ़्तार, कितनी दूरी तक यात्रा की गई, इत्यादि। संक्षेप में हर आवश्यक बात।

मैंने शुक्रवार 14 अगस्त की तारीख डाली और इसके बाद हवा की दिशा, तापक्रम आदि आवश्यक बातें जिस प्रकार प्रोफ़ेसर ने बतलाईं, नोट कीं। बारह बजे के लगभग हैंस ने मछली पकड़ने के लिए रस्सी के टुकड़े में थोड़ा सा मांस बांधकर पानी में लटका दिया। दो घंटे तक कुछ भी न मिला। फिर रस्सी कुछ खिंचती हुई मालूम दी। हैंस ने रस्सी खींच ली। एक मछली आ फंसी थी। बड़ी अजीब मछली थी। उसका सिर चौड़ा, गोल। आंखों का कहीं पता नहीं। इतना ही नहीं पूंछ, दांत इत्यादि कुछ भी तो नहीं थे।

"कैसी विचित्र है यह मछली," मैं चिल्लाया। प्रोफ़ेसर ने उसे देखा।

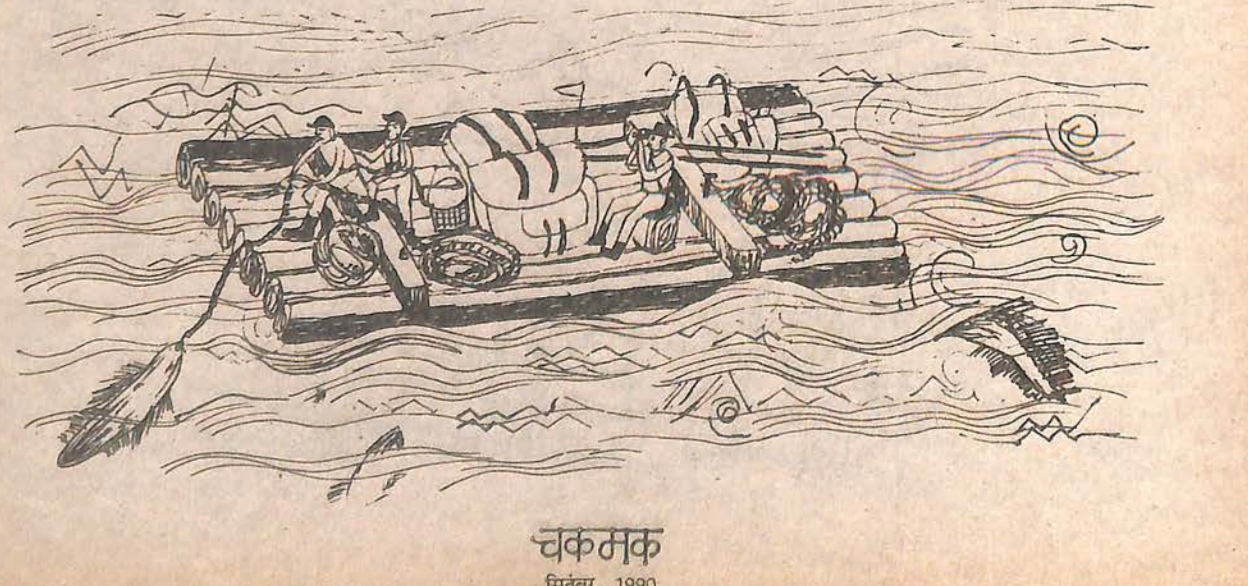
"यह कई सौ करोड़ वर्ष पुरानी मछली है।" प्रोफ़ेसर बोले "आज कल तो इनके केवल पथराए हुए अवशेष ही मिलते हैं।"

हैंस ने दोबारा कोशिश की। कई बार कोशिश करने पर इसी तरह की मछलियां जमा हो गईं। हमारे खाने का अच्छा ख़ासा सामान इकट्ठा हो गया था। तब मेरा मस्तिष्क एक प्रकार का दिवास्वप्न देखने लगा। मुझे लगा कि मैं पृथ्वी के आदि काल में पहुंच गया हूं। पहिले पृथ्वी पर न तो पौधे हैं और न जीव-जंतु ही। फिर जीवन का आरंभ होता है। धीरे-धीरे मनुष्य भी उत्पन्न हुआ। आरंभ में वह बालों से ढका हुआ है। और तब अंत में हिम-युग आया जिसमें योरोप का अधिकांश भाग बर्फ़ की मोटी तह से ढका था।

तभी चाचा जी के स्वर से मेरा दिवास्वप्न भंग हो गया। "बड़ी अच्छी हवा चल रही है। समुद्र भी शांत है। मैं सोचता हूं कि अब ज़मीन अधिक दूर नहीं।" मैं खड़ा होकर अपने चारों ओर देखने लगा। लेकिन दूर-दूर तक कहीं भी ज़मीन का नामों निशान न दिखाई दिया।

(अगले अंक में जारी)

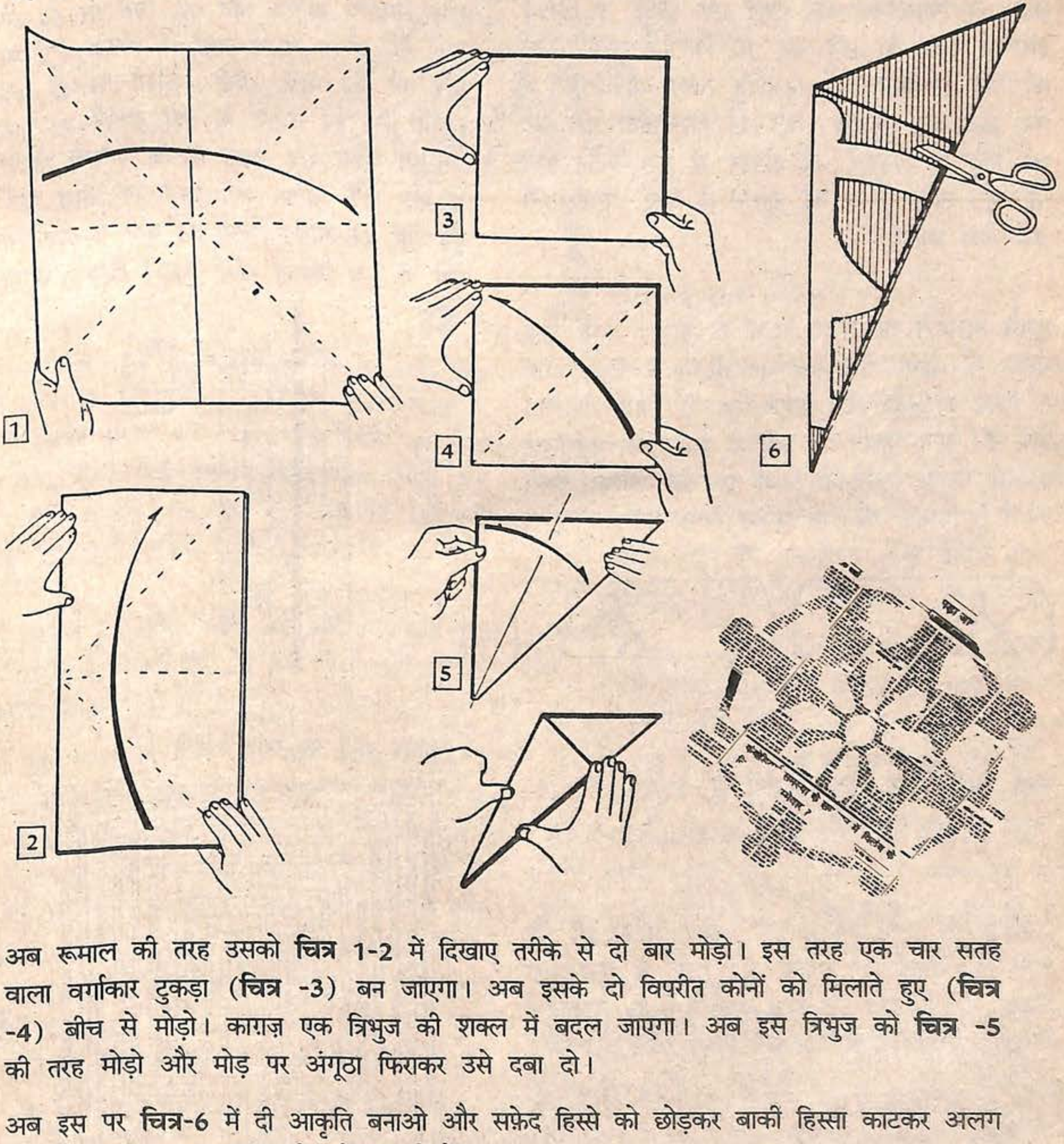
जूलेवर्न के उपन्यास *'ए जर्नी इन टू दी सेंटर ऑफ अर्थ,'* का अनुवाद। अनुवादक : प्रभात किशोर मिश्र। सौजन्य : इंडियन प्रेस, इलाहाबाद। सभी चित्र : शोभा घारे।



खेल कागज़ का

पिछले अंक में तुमने अख़बार से आकृतियों की चेन बनाने का तरीका देखा था। इस बार देखो कि कैसे किसी आकृति की चेन को एक घेरे के रूप में बनाया जा सकता है।

तुम जितना बड़ा घेरा बनाना चाहो, उस अनुपात में अख़बार या उसका टुकड़ा लो। पर यह ध्यान रहे कि वह वर्गाकार हो।



अब रूमाल की तरह उसको **चित्र 1-2** में दिखाए तरीके से दो बार मोड़ो। इस तरह एक चार सतह वाला वर्गाकार टुकड़ा (**चित्र -3**) बन जाएगा। अब इसके दो विपरीत कोनों को मिलाते हुए (**चित्र -4**) बीच से मोड़ो। कागज़ एक त्रिभुज की शक्ल में बदल जाएगा। अब इस त्रिभुज को **चित्र -5** की तरह मोड़ो और मोड़ पर अंगूठा फिराकर उसे दबा दो।

अब इस पर **चित्र-6** में दी आकृति बनाओ और सफ़ेद हिस्से को छोड़कर बाकी हिस्सा काटकर अलग कर दो। बस अब आकृति को खोलकर देखो!



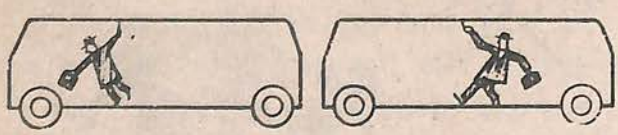
माथापच्ची

(1)

बर्फ़ *पर फिसलकर जाने वाले एक व्यक्ति ने हिसाब लगाकर देखा कि यदि वह 10 किलोमीटर प्रति घंटे की गति से फिसले तो निर्धारित स्थान पर दोपहर के एक घंटा बाद पहुंचेगा। यदि 15 किलोमीटर प्रति घंटे की गति से फिसले, तो दोपहर से एक घंटा पहले पहुंचेगा। ठीक दोपहर को पहुंचने के लिए उसकी गति क्या होनी चाहिए?*

(2)

तुमने बस में तो सफ़र किया ही होगा। कभी ऐसा मौका भी आया होगा जब तुम्हें बैठने के लिए जगह न मिली हो और खड़े रहना पड़ा हो। यहां दो चित्र दिए हैं। एक स्थिति तब की है जब रुकी हुई बस एकदम चलती है। दूसरी स्थिति बस के एकाएक रुकने की है। पहचानो कौन-सी स्थिति किस समय की है।

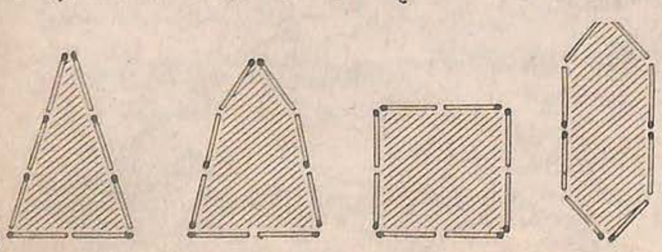


(3)

क्या सिर्फ आठ सीधी लाइनों से 2 वर्ग और 4 त्रिभुज बनाना संभव है?

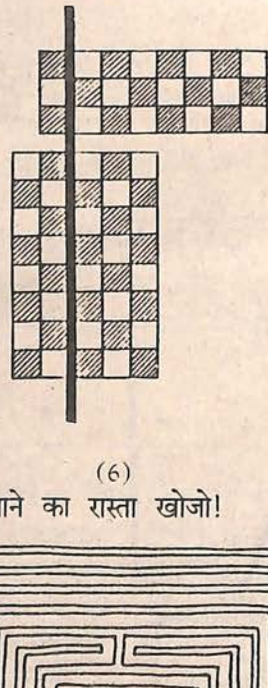
(4)

माचिस *की आठ तीलियों से अनेक प्रकार की बंद आकृतियां बनाई जा सकती हैं। इनमें से कुछ यहां दिखाई गई हैं। क्या तुम आठ तीलियों में इन आकृतियों से बड़ी यानी अधिक क्षेत्रफल वाली आकृति बना सकते हो?*



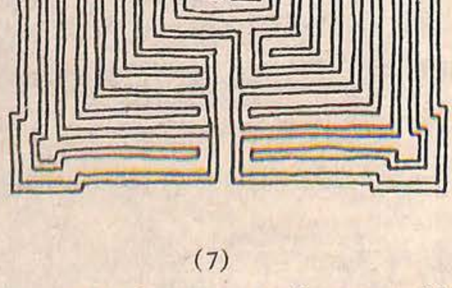
(5)

एक *साधारण शतरंज बोर्ड को, जिस पर 64 छोटे वर्ग होते हैं, अलग-अलग वर्गों में काटना है। पर कुछ शर्तें भी हैं। सिर्फ़ सीधी रेखाओं पर ही काटा जा सकता है। हर कटान के बाद टुकड़ों को एक दूसरे पर इस प्रकार रख सकते हो कि अगली सीधी कटान से एक नहीं, बल्कि कई टुकड़े एक साथ कट जाएं। पूरे बोर्ड को अलग-अलग 64 वर्गों में काटने के लिए कम से कम कितनी सीधी कटानें लगानी पड़ेंगी?*



(6)

अंदर जाने का रास्ता खोजो!



(7)

षट-फलकीय *पेंसिल में कितने फलक होते हैं?*

क्यों... क्यों... क्यों...



ज्योति सोनी, छठवीं, इटारसी

मुनिया के छोटे भाई का मुंडन हुआ तो मुंडन के बाद उसके सिर पर हल्दी का लेप लगाया गया। मुनिया ने मां से इसका कारण पूछा, तो उन्होंने हमेशा की तरह डांट दिया, "क्या ऊलजलूल सवाल पूछा करती है। मुंडन के बाद हल्दी का लेप मेरी नानी की नानी भी लगाती थीं, बस इसलिए हम भी लगाते हैं।"

मुनिया ने सोचा भला यह भी क्या बात हुई नानी की नानी लगाती थीं, सो हम भी लगाएं! मुनिया ने अपना सवाल हमें लिख भेजा!

हो सकता है ऐसे बहुत सारे सवाल तुम्हें भी परेशान करते हों। बहुत से ऐसे काम, तौर-तरीके तुम्हें पता ही नहीं क्यों किए जाते हैं, बस वही कि, नानी की नानी, या दादी की दादी या दादा किया करते थे सो हम भी किए जा रहे हैं। बहुत से कामों में तुम्हें मज़ा भी आता होगा और कुछ में तुम कह उठते होगे, 'कि क्या बकवास है।' पर सच्चाई क्या है? अगर यह जानने की इच्छा है तो फिर अपने आसपास नज़र घुमाओ और ऐसे सवाल हमें लिख भेजो।

पर एक बात पहले ही बता दें। हम ऐसे सवालों को चकमक में प्रकाशित करेंगे और अन्य तमाम पाठकों से उसके बारे में पूछेंगे। जो जवाब हमारे पास आएंगे, उनके आधार पर, अपनी टिप्पणी के साथ अगले किसी अंक में उत्तर प्रकाशित करेंगे।

एक बात और! यह ज़रूरी नहीं है कि हर पुरानी प्रथा, परंपरा या रीति-रिवाज़ दकियानूसी ही हो, उसके पीछे कोई उचित एवं तार्किक आधार भी हो सकता है। आधार एक या एक से अधिक भी हो सकते हैं। यह भी आवश्यक नहीं है कि हर परंपरा या प्रथा के पीछे आधार होगा ही! बहरहाल... तुम अपने उत्तर के लिए बड़े-बूढ़े, गुरुजी या जिससे भी चाहो मदद ले सकते हो।

अरे, लो मुनिया का सवाल तो भूल ही गए। मुनिया, हल्दी क्यों लगाई जाती है इसका एक कारण जो हमें पता है वह यह है कि हल्दी में 'एंटी सेप्टिक' गुण होता है। वह घाव में मवाद या पस पड़ने को रोकती है। मुंडन के समय उस्तरे या ब्लेड से सिर पर कोई खंरोच आदि आने की संभावना हमेशा बनी रहती है। हां, अब हो सकता है कि इसके अलावा भी कोई कारण हो। अब यह तो तुम्हारी नानी ही बता सकती हैं। पूछो तो भला...!

तुम्हारे लिए एक नया सवाल...

बहुत से लोग जब खाना खाने बैठते हैं तो थाली के चारों तरफ पानी का एक घेरा-सा बनाते हैं। पता करो ऐसा क्यों किया जाता है?

तुम्हारे जवाब 15 दिसंबर, 1990 तक हमें मिल जाने चाहिए।



नन्हे गुदड़ीलाल के साहसिक कारनामे

नन्ही मुर्गी की रक्षा

पौ फट चुकी थी।
चूहे अपने बिलों के पिछले दरवाज़े से अपने बिलों से बाहर जाने लगे।

गुदड़ीलाल ने उस तरफ देखा। वहां से सूरज की किरणें अंदर आ रही थीं। अच्छा, तो यहां पिछला दरवाज़ा भी है। यह बात अब भी उसकी समझ में नहीं आ रही थी कि सभी चूहे पीछे के दरवाज़े से क्यों चले गए, जबकि अपनी योजना के अनुसार उन्हें नन्हीं कुकड़ूकूं का वहीं इंतज़ार करना था।

कुछ समय बाद गुदड़ीलाल को किसी के दौड़ने की आवाज़ सुनाई दी। उसने पीछे मुड़कर देखा। चौथा भाई दौड़ता हुआ अंदर आ रहा था। एक चीज़, जिसे वह उठाए हुए था, उसने ज़मीन पर रख दी।

"वाह! मैं कितना चतुर चूहा हूं!" वह बोला। "जब तक मैं कुछ और गुबरैले नहीं पकड़ लेता तब तक इस गुबरैले को यहीं रख देता हूं। फिर हम सब नन्ही मुर्गी को मारकर दावत उड़ाएंगे।"

कुछ समय बाद तीसरा भाई लौट आया। उसने भी अपने हाथ की चीज़ ज़मीन पर रख दी और यह कहता हुआ फिर बाहर चला गया :

"वाह! मैं कितना चतुर चूहा हूं! फिलहाल मैं इस इल्ली को बिल के अंदर रख देता हूं। बाद में हम इसे दरवाज़े के पास रख देंगे। ज्यों ही नन्ही मुर्गी इसे खाने आएगी, हम उसे मार डालेंगे।"

गुदड़ीलाल ने दिमाग़ पर बहुत जोर डाला, तो उसे सारी बात समझ में आ गई! चूहे दरअसल कीड़े-मकोड़े पकड़ने के लिए बाहर गए थे, ताकि उनका लालच देकर नन्ही मुर्गी को बिल के अंदर ला सकें। अगर वह एक बार उनके जाल में फंस गई, तो चूहे उस पर झपट पड़ेंगे और उसे मार डालेंगे। यह थी उनकी साज़िश।

जब गुदड़ीलाल को उनकी साज़िश का पता चला, तो उसकी चिंता और बढ़ गई। अगर नन्ही मुर्गी अभी आ जाती, तो कितना अच्छा होता! अचानक गुदड़ीलाल को बिल के बाहर एक सुरीली बांग सुनाई दी :

"कुकड़ूकूं, कुकड़ूकूं, गुदड़ीलाल तुम कहां हो?
कुकड़ूकूं, कुकड़ूकूं, गुदड़ीलाल तुम कहां हो?"

नन्ही मुर्गी शायद कमरे के अंदर आ चुकी थी।

"जल्दी भाग जाओ! नन्ही मुर्गी, यहां से जल्दी भाग जाओ!" गुदड़ीलाल ज़ोर से चिल्लाया।

"गुदड़ीलाल तुम कहां हो?" नन्ही मुर्गी ने पूछा।

"जल्दी करो! तुम यहां से फ़ौरन भाग जाओ!" गुदड़ीलाल फिर एक बार ज़ोर से चिल्लाया। "जल्दी करो, फ़ौरन अपने दोस्तों के पास चली जाओ!"

"लेकिन यह तो बताओ गुदड़ीलाल, तुम कहां छिपे हुए हो?" नन्ही मुर्गी ने पूछा। "मुझे तुम कहीं नहीं दिखाई दे रहे हो। ज़रा बाहर तो निकलो!"

गुदड़ीलाल परेशान होकर बार-बार बिल के पिछले दरवाज़े की तरफ देखता जा रहा था।

"जल्दी भाग जाओ! वे लोग आ रहे हैं!"



"कौन लोग? आख़िर कौन लोग आ रहे हैं?" नन्ही मुर्गी ने हंसते हुए पूछा।

"चूहे!" गुदड़ीलाल ज़ोर से चिल्लाया। "वे तुम्हें मार डालने की साजिश रच रहे हैं।"

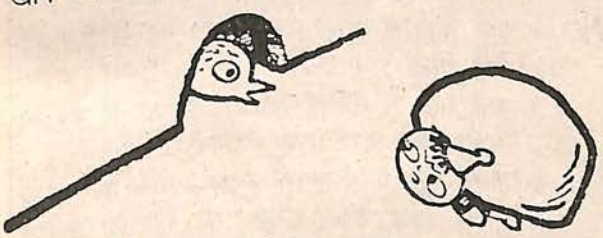
नन्ही मुर्गी को लगा, गुदड़ीलाल अलमारी के

नीचे से बोल रहा है।

"मैंने तुम्हें ढूंढ निकाला है! मैंने तुम्हें ढूंढ निकाला है!" वह हंसती हुई बोली। "मैं जीत गई हूं। तुमने छिपने के लिए कितनी अच्छी जगह ढूंढ ली है! तुम भी खूब हो!"

नन्ही मुर्गी अभी गुदड़ीलाल को नहीं ढूंढ पाई थी, क्योंकि चूहों के बिल के भीतर काफी अंधेरा था।

"ये दुष्ट चूहे मुझे अपने बिल में ले गए हैं!" गुदड़ीलाल ने बताया। "मैं बाहर नहीं आ सकता। वे तुम्हें मारकर खाना चाहते हैं। इसलिए वे बिल के पास कुछ कीड़े-मकोड़े रखते जा रहे हैं। अगर तुम कीड़े-मकोड़े खाने आओगी, तो वे तुम्हें मारकर खा जाएंगे!"



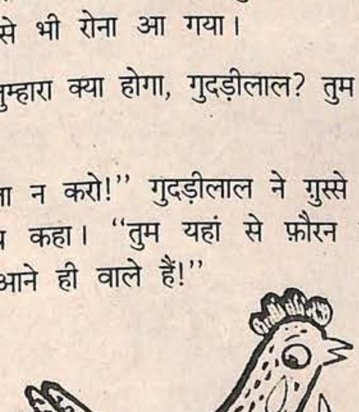
"मुझे तुम्हारी बातों पर बिलकुल विश्वास नहीं हो रहा! तुम मुझसे मज़ाक तो नहीं कर रहे हो? तुम झूठ तो नहीं बोल रहे हो?" नन्ही मुर्गी ने हंसते हुए कहा।

यह सुनकर गुदड़ीलाल को रोना आ गया। "तुम्हें क्या हो गया है? तुम मेरी बात सुनती क्यों नहीं?" वह ज़ोर से चिल्लाया। "यहां से फ़ौरन भाग जाओ! चूहे किसी भी समय लौट सकते हैं!"

जब उसने गुदड़ीलाल के रोने की आवाज़ सुनी, तब कहीं उसे उसकी बात पर विश्वास हुआ। वह इतनी घबरा गई कि उसे भी रोना आ गया।

"लेकिन तुम्हारा क्या होगा, गुदड़ीलाल? तुम क्या करोगे?"

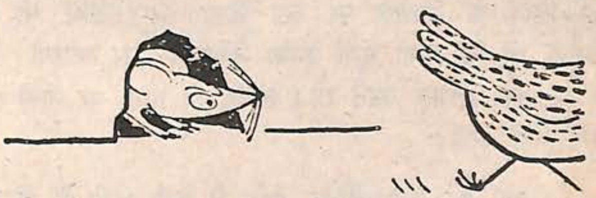
"मेरी चिंता न करो!" गुदड़ीलाल ने गुस्से और परेशानी के साथ कहा। "तुम यहां से फ़ौरन चली जाओ! वे दुष्ट आने ही वाले हैं!"



"ठीक है, गुदड़ीलाल मैं जा रही हूं। अपने बारे में चिंता न करना। मैं तुम्हें बचाने का कोई न कोई उपाय ज़रूर खोज निकालूंगी!" नन्ही मुर्गी रोती हुई बोली।

गुदड़ीलाल को कुछ राहत मिली। अचानक उसे फिर किसी के दौड़ने की आवाज़ सुनाई दी। चूहे लौटकर आ रहे थे। पहले दूसरा भाई आया, फिर सबसे बड़ा भाई, तीसरा भाई और चौथा भाई।

दूसरा भाई अंदर आते ही बिल के सामने वाले दरवाज़े की तरफ दौड़ा। उसे बाहर जाती नन्ही मुर्गी दिखाई दी।



दूसरे भाई ने चारों तरफ देखा और गुस्से से भरकर गुदड़ीलाल को घूरने लगा। उसने सबसे बड़े भाई के कान में यह फुसफुसाया। सब से बड़ा भाई गुस्से से लाल-पीला हो गया।

"अरे ओ जंगली! तूने हमारा रहस्य मुर्गी को कैसे बता दिया? इसे मेरे पास लाओ! मैं इससे जवाब तलब करता हूं!"

तीसरे और चौथे भाई ने पत्थर एक तरफ हटा दिया। उन्होंने गुदड़ीलाल के दोनों हाथ पकड़ लिए और उसे घसीटते हुए बड़े भाई के पास ले गए।

"तुमने हमारी योजना नन्ही मुर्गी को क्यों बता दी?" सबसे बड़े भाई की आंखों से चिनगारियां निकल रही थीं।

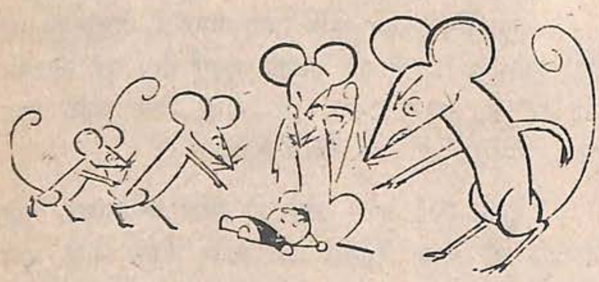
"बोलते क्यों नहीं?" बाकी तीनों चूहों ने एक स्वर में कहा।

"मैं कुछ नहीं बताऊंगा!" गुदड़ीलाल ने दृढ़ता से कहा। वह गुस्से से भरा हुआ था।

"इसे फिर उछालो!" सबसे बड़े भाई ने हुक्म दिया। "और तब तक उछालते रहो, जब तक इसकी जान न निकल जाए!"

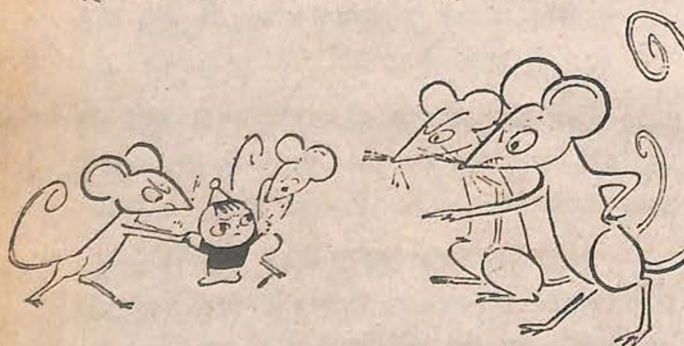
बाकी तीनों भाइयों ने गुदड़ीलाल को उठा लिया और उसे बुरी तरह उछालने लगे।

जब चूहे गुदड़ीलाल को उछालते-उछालते थक गए, तो उन्होंने उसे फिर से पत्थर के नीचे दबा दिया और खुद आराम करने लगे।



थोड़ी देर सुस्ताने के बाद उन्होंने कीड़े-मकोड़े को बिल के दरवाज़े पर रख दिया। उन्हें अब भी उम्मीद थी कि नन्ही मुर्गी उनके जाल में फंस जाएगी। वे देर तक इंतज़ार करते रहे। अंधेरा हो गया, पर नन्ही मुर्गी नहीं आई।

चूहों को बड़ी निराशा हुई। वे इतने गुस्से में थे कि गुदड़ीलाल के टुकड़े-टुकड़े कर डालना चाहते थे। लेकिन उस समय वे भूख से बेहाल हो रहे थे। इसलिए यह सब करने की शक्ति उनमें नहीं थी।



अंधेरे में चूहे भोजन की तलाश में निकल पड़े। गुदड़ीलाल ने दूसरे भाई को सबसे बड़े भाई से यह कहते सुना :

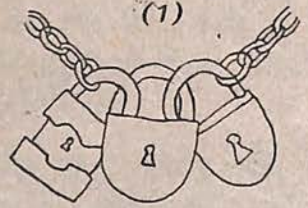
"हम लोग जब भरपेट भोजन कर लेंगे, तो इस दुष्ट को मार डालेंगे। इस बार हम इसे जान से मार डालेंगे। हम इसकी गरदन काट देंगे, इसका सिर तोड़ देंगे और फिर इसे एक गड्ढे में दफना देंगे।"

"अच्छा, तो ये लोग मुझे जान से मारने की साजिश रच रहे हैं!" गुदड़ीलाल ने आह भरते हुह मन ही मन कहा।

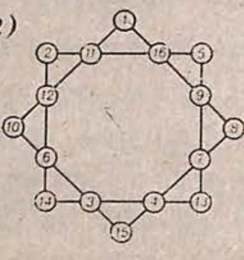
मूल लेखक : सुन यओच्युन
अनुवादक : जानकी एवं श्यामा बल्लभ
सभी चित्र : शन फेई

माथा पच्ची : हल, अगस्त अंक के

(1)



(2)



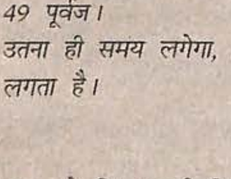
(3) 1. पहले समूह में प्रत्येक संख्या में 21 बढ़ रहे हैं। यानी चौथी संख्या 504 होगी।
2. दूसरे समूह में संख्याएं 24, 25 एवं 26 का वर्ग हैं। इसलिए चौथी संख्या 27 का वर्ग यानी 729 होगी।
3. तीसरे समूह में सैंकड़े की संख्या क्रमशः बढ़ रही है जबकि इकाई संख्या क्रमशः घट रही है। इसलिए चौथी संख्या 612 होगी।

(4) 49 पूर्वज।

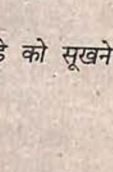
(5) उतना ही समय लगेगा, जितना एक कपड़े को सूखने में लगता है।

(6) मान लो कि असली सिक्कों का वज़न (प्रत्येक का) एक ग्राम है। अब ढेरियों को एक क्रम से जमाओ। उन्हें क्रमशः एक, दो, तीन, चार.... दस नंबर दे दो। अब हर ढेरी में से उतने ही सिक्के उठाओ, जो उसका नंबर है। यानी पांचवीं ढेरी में से पांच, छठवीं में से छह आदि। जो ढेरी बनेगी, उसमें 55 सिक्के होंगे। इस ढेरी को तौल लो। जो भी वज़न आएगा, उसमें से 55 घटा दो। क्योंकि वह असली 55 सिक्कों का वज़न है, शेष नकली सिक्कों का। तो जो शेष होगा, उसी नंबर की ढेरी नकली होगी।

(7)



(8)



(9) 1. पत्थर 2. गिलास 3. गेंदा 4. नेपाल 5. तांगा



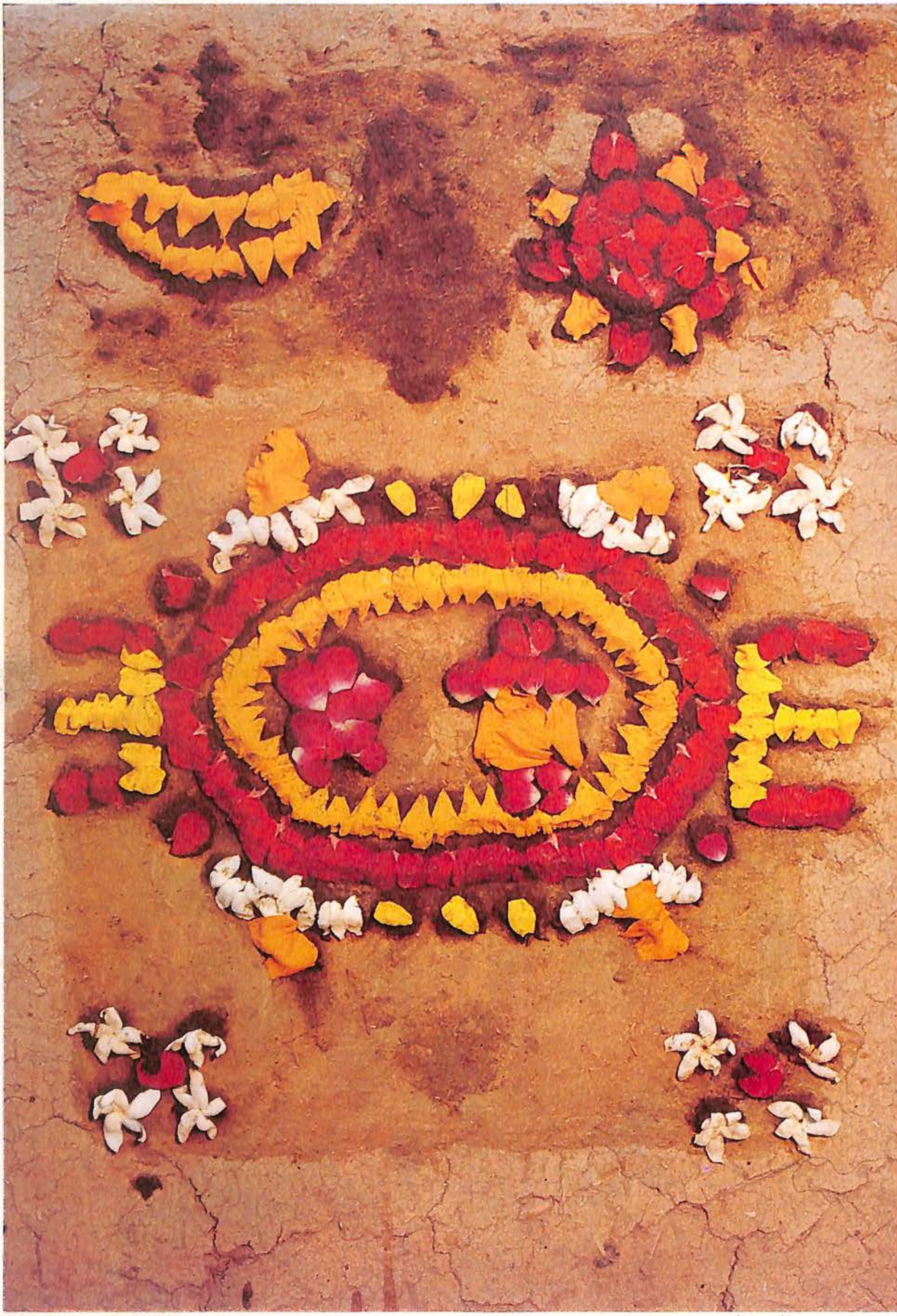
निर्मला कोसवाड़ा सातवीं, पीपल्या मंडी



सुप्रिया दीक्षित, सातवीं, पंडोला, मुरैना

चकमक

पंजीयन क्रमांक 50309/85 के अंतर्गत भारत के समाचार पत्रों के रजिस्टार द्वारा पंजीकृत।
डाक पंजीयन क्रमांक BPL/DN/MP/431/90



रेक्स डी रोजारियो की ओर से विनोद रायना द्वारा भंडारी ऑफसेट प्रिंटर्स, भोपाल से मुद्रित एवं एकलव्य, ई-1/208, अरेरा कॉलोनी, भोपाल-462 016 से प्रकाशित।
संपादक : विनोद रायना।